

मैं सेवा कराने नहीं बल्कि सेवा करने आया हूँ !

With Best Compliments from :

PERSEVERANCE
DOHNA

Management, Principal & Staff

BISHOP CONRAD SR. SEC. SCHOOL

Modern Village, DOHNA - 243 202
P.O. Bhojipura, Distt. Bareilly (U.P.)
Phone : 9927336317



बरेली धर्मप्रांतीय पत्रिका

चेतना

वर्ष 32 | नवम्बर 2026 | अंक 11



बच्चों को मेरे पास आने दो

निजी प्रसारण हेतु



SR. GRACILDA DIAS, UFS

Born : 18.03.1947

Born to Eternal Life :
11.10.2026

रोगियों की सेवा में जिसने समर्पित
कर दिया अपना हर एक पल,
ऐसी करुणामयी और समर्पित
आत्मा को शत-शत नमन।
दूसरों के जख्मों को सहलाते-सहलाते
जो खुद ईश्वर के चरणों में लीन हो गईं,
ऐसी निस्वार्थ और ममतामयी माँ
को भावपूर्ण श्रद्धांजलि।



पुरोहित साधना – बरेली





बैंगलूरू से पुरोहित, धर्मबहनों का बरेली दौरा



दृढ़ीकरण संस्कार – करेली



धार्मिक जीवन की रजत जयंती – सि. प्रिया, SAP रुद्रपुर





धर्मप्रांत में स्वागत – फा. राकेश प्रभु



सि. जीन थॉमस HFC की भेंट



अनुभव कार्यक्रम – बरेली





राष्ट्रीय पारिवारिक आयोग संगोष्ठी – हैदराबाद





जैविक खाद प्रशिक्षण – पोलीगंज



बीज वितरण – बण्डा



संत फ्रांसिस पर्व – मीरगंज



क्रूसवीर दिवस – बाज़पुर



डॉ. क्रिस्टीना पैट्रिक – रानीखेत



बालिका सशक्तिकरण – पोलीगंज

चेतना



Patron
Most Rev. Ignatius D'Souza

Editor
Fr. Gregory Frank

Editorial Board
Fr. Ivan Crasta
Fr. Vivian Fernandes
Fr. Arun Saldanha
Fr. Francis Pinto
Fr. Vijay Tellis
Mrs. Sumita James
Miss Shweta D Cruze

Whatsapp No. : 8533886703
Publishing Head Quarters:
Bishop's House
63, Cantt., Bareilly - 243 001
website: www.bareillydiocese.org

Design & Printing
Conrad Publishing House
P-1/B-15, Opp. Dominos,
D.D. Puram, Bareilly
Phone: 0581-2300802

अनुक्रम

1.	सम्पादकीय	फा. ग्रेगरी फ्रैंक	2
2.	Bishop's Message	Most Rev. Ignatius D'Souza	3
3.	धर्माध्यक्ष का संदेश	अति मान्यवर डा. इग्नेशियस डिसूज़ा	4
4.	Bishop's Engagements	Fr. Charles P.	5
5.	If We But Follow Him	Sr. Esme da Cunha, FDCC	6
6.	CHOSEN, Not Spared	Sr. Rekha Punia, UMI	7
7.	Unless You Become Like Little Children	Sr. Lavina Dabre, MSI	8
8.	Experience of Being a Child of God	Sr. Smitha, FCC	10
9.	The Communion of Saints...	Fr. Ajay Lobo	11
10.	The Joy of Being a Child of God	Sr. Ibarisha Lyngdoh, VSDB	12
11.	Advent – A Joyful Waiting	Sr. Helen, UFS	14
12.	To Be Like Children	Nisha John Masih	15
13.	A Dream, A Journey, A Blessing	Dr. Christina Patrick	17
14.	आगमन काल की आनन्दमय आशा	स्व. श्रीमती सबर सिंह	18
15.	कील	शोभा	19
16.	बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ...	शिवांगी शर्मा	20
17.	प्रभु येसु किस प्रकार के राजा है?	फा. फ्रांसिस पिन्टो	22
18.	समाचार दर्शन		24
19.	बाइबिल प्रश्नोत्तरी	सुश्री श्वेता डिक्रूज़	27

संत पिता का मतलब : नवम्बर 2026

धन के उचित उपयोग के लिए:

आइए, हम धन के उचित उपयोग के लिए प्रार्थना करें, कि स्वार्थ के प्रलोभन में न पड़कर, इसे हमेशा निर्धनों और पीड़ितों के सामुदायिक कल्याण और एकजुटता की सेवा में लगाया जाए।

Holy Father's General Intention: November 2026

For the proper use of wealth:

Let us pray for the proper use of wealth, that not succumbing to the temptation of selfishness, it may always be put at the service the common good and solidarity of those who have less.

सम्पादक की कलम से

एक असाधारण राजा प्रभु येसु ख्रीस्त

पुण्य शुक्रवार को प्रात: जब यहूदियों के महायाजक और नेताओं ने येसु को पिलातुस के सामने पेश किया तब पिलातुस को यह पूरा मामला बड़ा अजीब और हास्यस्पद लगा होगा। क्योंकि उसके सामने एक कैदी लाया गया, शायद पिलातुस के पूरे शासनकाल में पहली बार कि कोई निर्बल, असहाय दिखने वाला व्यक्ति अपने को राजा कहता हो और पिलातुस ने उस पर व्यंग्य, कटुता और तिरस्कार भरे अंदाज में यह प्रश्न किया, "क्या तुम यहूदियों के राजा हो ?"

पिलातुस के शासनकाल में उसके सामने रोमियों के विरुद्ध विद्रोह करने वाले बहुत से यहूदी नेताओं को लाया गया था। उन सब को पिलातुस ने निर्ममता से क्रूस की यातना भरी क्रूस दंड सुनाया था। परन्तु आज जो व्यक्ति उसके सामने था वह सबसे भिन्न था। उसके मुखमंडल पर एक तेज था- विद्रोह नहीं। उसका चेहरा थका हुआ अवश्य था पर उसकी आँखों में एक चमक थी। आगे जब पिलातुस ने अधिकार की बात कही तब उसे येसु का ऐसा उत्तर मिला जो उसने शायद पहले कभी नहीं सुना था, **"यदि आपको ऊपर से अधिकार न दिया गया होता, तो आपका मुझ पर कोई अधिकार नहीं होता।"**

पिलातुस यह कभी समझ नहीं पाया कि 'ऊपर से दिया गया अधिकार' क्या है। इस फेहरिस्त में पिलातुस से पहले और उसके बाद, आज भी ऐसे बहुत शासक, नेता, अगुवा, नायक आ चुके हैं जो अधिकार को अपने दम और बलबूते पर हासिल किया हुआ हक समझते हैं। इस परिस्थिति में ऐसे नेता, शासक या अगुवा की प्राथमिकता और उस अधिकार का दंभ का दिखावा होती है। इसलिये येसु ने अपने शिष्यों से कहा, **"तुम्हारे बीच ऐसा नहीं होना चाहिए।"**

नेतृत्व की येसु की शैली और उनकी शिक्षा आज के मानकों के सामने बड़े विचित्र लगते हैं और आज की समाज में अनुपयुक्त और असंगत लगते हैं। एक मसीहा की राह देखने वालों के लिए येसु का चरित्र ही कल्पनातीत लगता है। वे लोग एक ऐसे नेता या अगुवा की इच्छा रखते थे या कल्पना करते थे जो अपने पूरे लौ-लश्कर और शान-शौकत तथा शौर्य के साथ आयें और रोमी शासन के शाप को मिटा दें। वे ऐसे राजा की कल्पना भी कर सकते थे जो:

- **एक चरनी में जन्मा है**
- **जो एक बढ़ई का पुत्र हो**
- **जो पापियों के साथ भोजन करता हो**
- **वैश्या के साथ बात करता है**
- **एक नाकेदार को अपना शिष्य चुनता है**
- **एक गाल पर मारने पर दूसरा गाल दिखाता है**
- **सत्तर बार सात गुना क्षमा करता है**
- **एक गधे पर सवार होकर येरुसालेम में प्रवेश करता है**
- **काँटों का मुकुट पहनता है**
- **उसकी हँसी उड़ाई जाती है, उस पर थूक दिया जाता है**
- **दो चोरों के बीच कुकर्मी के समान क्रूस पर लटका दिया जाता है।**

येसु की इस प्रकार की जीवन शैली न उन दिनों, न ही आज लोगों को, नेताओं को पसंद है। फिर भी येसु कहते हैं, "मानव पुत्र सेवा कराने नहीं बल्कि सेवा करने और बहुतों के उद्धार के लिये अपने प्राण देने आया है" (मारकुस 10:45)।

नये व्यवस्थान में नेतृत्व के कुछ असाधारण प्रतीक हैं: वे हैं- सेवक, चरवाहा और कारिंदा। एक ख्रीस्तीय नेता, चाहे कलीसिया में अथवा समाज में, को अपने कार्य को एक सेवाकार्य के रूप में देखना चाहिये। जो आप करते हैं वह इस पर आधारित होना चाहिये कि आप कौन हैं। राजाओं का राजा प्रभु येसु हमें इस प्रकार सेवा करने और जीवन बिताने की कृपा प्रदान करें।

ग्रेगरी फ्रैंक

Who Rules Our Hearts?



"**My kingdom is not of this world**." (John 18:36)

On the Feast of Christ the King, we are invited to reflect on a profound question: **Who truly rules our hearts and guides our lives?** We live in a world that values power, wealth, position, popularity and success. People often measure greatness by how much they possess, how many people follow them, or how much influence they exercise. But Jesus Christ presents a radically different understanding of kingship. He wears no golden crown, sits on no earthly throne, and commands no army. **His crown is made of thorns, His throne is the Cross, and His power is the power of love.**

Jesus is a King who does not dominate but serves, who does not condemn but forgives, and who does not destroy His enemies but offers His life for them. In today's world, where hatred divides families, violence destroys peace, selfishness weakens relationships, and the pursuit of material things often overshadows spiritual values, **Christ the King calls us to build a different kind of kingdom, a kingdom of truth, justice, compassion, forgiveness and peace.**

To accept Christ as our King is not merely to honour Him with prayers, hymns and religious celebrations. It is to allow His teachings to shape our decisions, His love to influence our relationships, and His truth to guide our conscience. **He must reign in our homes through mutual respect, in our society through justice, in our workplaces through honesty, and in our hearts through humility and forgiveness.** Jesus identifies Himself with the hungry, the thirsty, the stranger, the sick and the imprisoned (Matthew 25:35–40). Therefore, whenever we care for the poor, defend the dignity of the weak, console the suffering, or stand beside someone who has been forgotten, we allow the Kingdom of Christ to become visible in our world.

The Feast of Christ the King also challenges every leader - whether in the Church, family, society or public life, **to remember that true greatness lies not in being served but in serving others.** Authority is a responsibility, wealth is an opportunity to share, and leadership is a call to sacrifice for the good of others.

Dear brothers and sisters, the most important question today is not whether Christ is King of the universe, but whether He is King of our hearts. We cannot proclaim Christ as our King on Sunday and allow pride, anger, dishonesty and hatred to govern our lives during the week.

Let us therefore enthrone Christ not only in our churches but also in our homes, our relationships, our decisions and our daily lives. **When Christ reigns in our hearts, peace replaces hatred, forgiveness overcomes resentment, service conquers selfishness, and hope triumphs over despair.**

May Christ be the King of our thoughts, the King of our words, the King of our actions, and the King of our hearts. And may our lives become a living testimony that His Kingdom is already taking root wherever love, truth, justice and mercy prevail. "**To Him who loves us and has freed us from our sins by His blood… to Him be glory and dominion for ever and ever.**" (Rev. 1:5–6)

Long live Christ the King - not merely on our lips, but in our hearts, our homes and our world!

† Ignatius D' Souza
Bishop of Bareilly

धर्माध्यक्ष का संदेश

हमारे दिलों पर किसका राज है?

"मेरा राज्य इस संसार का नहीं है।" (योहन 18:36)

ख्रीस्त राजा के पर्व पर, हमें एक गहरे प्रश्न पर विचार करने के लिए आमंत्रित किया गया है: वास्तव में हमारे दिलों पर किसका शासन है और हमारे जीवन का मार्गदर्शन कौन करता है? हम एक ऐसे संसार में रहते हैं जो सत्ता, धन, पद, लोकप्रियता और सफलता को महत्व देता है। लोग अक्सर महानता को इस बात से मापते हैं कि उनके पास कितना कुछ है, कितने लोग उनका अनुसरण करते हैं, या वे कितना प्रभाव रखते हैं। लेकिन येसु राजा होने की एक बिल्कुल भिन्न समझ प्रस्तुत करते हैं। वे कोई सोने का मुकुट नहीं पहनते, किसी सांसारिक सिंहासन पर नहीं बैठते और न ही किसी सेना की कमान संभालते हैं। उनका मुकुट कांटों का बना है, उनका सिंहासन क्रूस है, और उनका सामर्थ्य प्रेम का सामर्थ्य है।

येसु एक ऐसे राजा हैं जो शासन नहीं करते बल्कि सेवा करते हैं, जो दोष नहीं लगाते बल्कि क्षमा करते हैं, और जो अपने शत्रुओं का विनाश नहीं करते बल्कि उनके लिए अपना जीवन बलिदान कर देते हैं। आज के इस संसार में, जहाँ नफरत परिवारों को बांटती है, हिंसा शांति को नष्ट करती है, स्वार्थ रिश्तों को कमजोर करता है, और भौतिक चीजों की लालसा अक्सर आध्यात्मिक मूल्यों को दबा देती है, वहीं ख्रीस्त राजा हमें एक अलग प्रकार का राज्य स्थापित करने के लिए बुलाते हैं- सत्य, न्याय, करुणा, क्षमा और शांति का राज्य।

ख्रीस्त को अपने राजा के रूप में स्वीकार करने का अर्थ केवल प्रार्थनाओं, भजनों और धार्मिक आयोजनों से उनका आदर करना ही नहीं है। इसका अर्थ है उनकी शिक्षाओं को हमारे निर्णयों को आकार देने देना, उनके प्रेम को हमारे रिश्तों को प्रभावित करने देना, और उनके सत्य को हमारे अंत:करण का मार्गदर्शन करने देना। उनका राज्य हमारे घरों में आपसी सम्मान के माध्यम से, हमारे समाज में न्याय के माध्यम से, हमारे कार्यस्थलों में ईमानदारी के माध्यम से और हमारे दिलों में विनम्रता और क्षमा के माध्यम से स्थापित होना चाहिए। येसु स्वयं को भूखों, प्यासों, परदेशियों, बीमारों और कैदियों के साथ जोड़ते हैं (मत्ती 25:35-40)। इसलिए, जब भी हम गरीबों की देखभाल करते हैं, कमजोरों की गरिमा की रक्षा करते हैं, पीड़ितों को सांत्वना देते हैं, या किसी उपेक्षित व्यक्ति के साथ खड़े होते हैं, तो हम ख्रीस्त के राज्य को इस संसार में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट होने देते हैं।

ख्रीस्त राजा का पर्व हर अगुवा और नेता को भी चुनौती देता है-चाहे वह कलीसिया में हो, परिवार में, समाज में या सार्वजनिक जीवन में-कि वे याद रखें कि सच्ची महानता सेवा कराने में नहीं बल्कि दूसरों की सेवा करने में है। अधिकार एक जिम्मेदारी है, धन बांटने का एक अवसर है, और नेतृत्व दूसरों की भलाई के लिए त्याग करने का एक आह्वान है।

प्रिय भाइयों और बहनों, आज सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह नहीं है कि क्या ख्रीस्त पूरे ब्रह्मांड के राजा हैं, बल्कि यह है कि क्या वे हमारे दिलों के राजा हैं? हम रविवार को ख्रीस्त को अपना राजा घोषित करते है और सप्ताह के बाकी दिनों में अपने जीवन पर घमंड, क्रोध, बेईमानी और नफरत का शासन चलने दें, यह संभव नहीं है।

इसलिए, आइए हम ख्रीस्त को केवल अपने गिरजाघरों में ही नहीं, बल्कि अपने घरों, अपने रिश्तों, अपने निर्णयों और अपने दैनिक जीवन में भी प्रतिष्ठित करें। जब ख्रीस्त हमारे दिलों पर राज करते हैं, तो घृणा का स्थान शांति ले लेती है, कड़वाहट पर क्षमा विजय पाती है, स्वार्थ पर सेवा हावी होती है, और निराशा पर आशा की जीत होती है।

ख्रीस्त हमारे विचारों के राजा, हमारे शब्दों के राजा, हमारे कार्यों के राजा और हमारे दिलों के राजा बनें। और हमारा जीवन एक जीवंत गवाही बने कि जहाँ भी प्रेम, सत्य, न्याय और दया का वास है, वहाँ उनका राज्य पहले से ही अपनी जड़ें जमा रहा है। "जो हम से प्रेम रखता है, और जिस ने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है... उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे।" (प्रकाशना 1:5-6)

ख्रीस्त राजा अमर रहें- केवल हमारे होठों पर ही नहीं, बल्कि हमारे दिलों में, हमारे घरों में और हमारे पूरे संसार में!

† **इग्नेशियस डिसूजा**,
धर्माध्यक्ष

CATHOLIC DIOCESE OF BAREILLY

Bishop's Engagements

November 2026

Date	Day	Time		Programme
1st – 2nd	Sun - Mon		AM	In Germany
3rd	Tue		PM	Returns to Bareilly
4th	Wed	11:00	AM	Attends 22nd Diocesan St. Mother Theresa Annual Sports Meet, St. Peter School, Kichha
		06:00	PM	Meets Provincial Superior Rev. Sr. Arpan BS, Bishop's House
5th	Thu		AM	Office
		05:00	PM	**Thanksgiving Mass: Silver Jubilee of Sacred Heart Convent Sr. Sec. School (SCJM), Partaspur**
6th	Fri		AM	Leaves for Khandwa
7th – 8th	Sat - Sun		AM	Attends Youth Convention Programme in Khandwa Diocese
9th	Mon	10:00	AM	Golden jubilee of UFS North Province, Jeevan Dhara, Luckow
		06:00	PM	Attends ARBC Meeting at St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad
10th	Tue		AM	Attends ARBC Meeting at Bishop's House, Allahabad
11th – 13th	Wed - Fri		AM	Attends Joint Meeting of ARBC, MS, ARPC, CRI at Nav Sadhana, Banaras
14th	Sat	07:00	AM	Returns to Bareilly
		06:30	PM	Holy Eucharist: FCC Provincialate, Bareilly
15th	**Sun**	**10:30**	**AM**	**Thanksgiving Mass: Platinum Jubilee of St. Maria Goretti School, St. Alphonsus Cathedral, Bareilly**
		05:00	**PM**	**Blessing and Dedication of Holy Family Church, Poliganj**
16th	Mon		AM	Office
		05:00	PM	Attends Annual Day Programme, St. Maria Goretti Sr. Sec. School, Bareilly
17th	Tue	09:00	AM	Attends Annual Sports Meet, St. Peter School, Bailparao
			PM	Returns to Bareilly
18th	Wed		AM	Office
		04:30	PM	Attends Annual Day Programme, St. Francis Sr. Sec. School, Bareilly
19th	Thu		AM	Office
20th	Fri		AM	Office
		04:00	PM	Attends Annual Day Programme, Hartmann College, Izatnagar
21st	Sat	10:00	AM	Attends Annual Sports Meet, St. Mother Theresa Memorial School Kareilly
22nd	**Sun**	**09:00**	**AM**	**Solemnity of Jesus Christ the King: St. Alphonsus Cathedral, Bareilly**
		05:00	**PM**	**Pastoral Visit to Christ the King Parish, Chorgallia**
23rd	Mon		AM	Office
24th	Tue	10:00	AM	**Diocesan Pastoral Council Meeting, St. Peter School, Kichha**
25th	Wed	10:30	AM	Attends Annual Sports Meet, St. Paul Inter College, Shahjahanpur
		06:00	PM	Holy Eucharist in Memory of Rev. Sr. Gracilda UFS, Hartmann Convent, Izatnagar
26th – 27th	Thu - Fri		AM	Office
28th	Sat	09:00	AM	Attends Annual Sports Meet, Asha Niketan Vidyalaya, Bailparao
29th	**Sun**	**11:00**	**AM**	**Holy Eucharist: St. John Church, Bambi**
		05:00	**PM**	**Blessing of the New Block, St. John School, Banda**
30th	Mon	08:00	AM	Visits Pipriya Mission
		02:00	PM	Attends Annual Sports Meet, St. John School, Banda

Fr. Charles P. Secretary

If We But Follow Him



How explicit Jesus has been, according to the Gospel accounts we have of His words and actions! He said: *I am the Way, the Truth and the Life. He who follows Me, will not live in darkness, but will have the light of Life!*

If you but follow Me! – What is He asking us to do? Just to follow His example! Reading through the Gospels we have a beautiful insight into His way of life: so single-minded, so open, so available to all – the small and the great, the docile and the rebellious, the wise and the ordinary folk, Jews and non- Jews. He teaches, He heals, He raises the dead, welcomes sinners. A Man for all! A magnetic personality, charming, transparent! No one was too high or too low for Him.

And the people responded: *No one speaks as He does! ... Lord, if You will, you can make me whole! ... Even the wind and the seas obey Him! ... If You had been here my brother would not have died. ... Lord, to whom shall we go? You have the words of eternal life!* What a wholehearted acceptance and trust in His words and in His deeds.

The Messiah, the Promised One of God, came to us as man, not only to show us the way to God, but to lead us to Him.

In November we celebrate the Feast of All the Saints – the thousands – men, women and even children, who took this Jesus at His word, and followed Him with all their heart. The Church remembers the host of such souls – some canonized, and many others known and revered for their holiness of life. Some, the martyrs, even laid down their lives for Him. We have such saints who lived even in our present times: for example - Teresa of Calcutta and Carlo Acutis.

And immediately after the feast of All the Saints, the Church draws our attention to yet another group: All Souls Day. Everyone who has died, but still needs purification before they can enter into the Beatific Vision of God!

And we belong to a third category, the saints in the making: still on earth, fumbling and stumbling in our efforts to discover and follow this luminous Jesus who is the Way, the Truth and the Life!

All one family – The Family of God! All created for heaven, and called to the wholeness and holiness of life that Jesus came to teach us. What a companion we have in Him, if only we are attentive to His voice, and want to follow in His footsteps. He calls everyone, no one excluded! … if we but listen to His voice.

So, in this last month of the Liturgical cycle, together with the celebrations of the *Feasts of All Saints* and *All Souls*, we also celebrate the earthly pilgrimage of *all human beings* - men, women and children, made to the image and likeness of God, irrespective of race and religion – all loved and blest by God. We are all on our march towards our heavenly homeland – for which we were created- our everlasting heavenly abode!

It is no coincidence that the last Sunday of the Liturgical Year is dedicated to Christ the King! We are part of that glorious procession. We follow Him, our King and Saviour, who redeemed us from sin, to make us worthy citizens of His heavenly Kingdom. He paid the price for our iniquity and washed away our sin by His sacred Blood.

He is our God, our Saviour, to whom we belong. And He leads us all on to that heavenly Home our God has made ready for us from all eternity.

What a glorious home-coming, what immense joy, and for all eternity!

To Him be the glory, the honour and the majesty, now and forever, Amen!

Christus vincit, Christus regnat, Christus Christus imperat!

Christus vincit: Christ conquers (He has triumphed over sin and death).

Christus regnat: Christ reigns (He is the active, reigning King of heaven and earth).

Christus imperat: Christ commands (His authority is supreme over all creation).

Sr. Esme da Cunha Fdcc,
Prayagraj

✦✦✦✦✦✦✦

CHOSEN, Not Spared



From the very childhood, I had this subtle awareness that I was personally loved and chosen by God. But, on being grown up, when I got busy with various occupations and responsibilities, I thought God had forgotten about me! So, I earnestly prayed with all sincerity, *"Lord, use me. Draw me closer to You. Make me the person You want me to be."* I prayed those words with love, trusting that God would lead me closer to His heart.

But soon, life brought its share of unexpected lessons - undeserved criticism, painful misunderstandings, and betrayals that quietly bruised my heart. I found myself asking, *"Lord, I asked You to use me. Why does it hurt so much?"* **And, honestly, I became a little afraid of my own prayers!** I would hesitate before asking God to draw me closer, wondering what difficult lesson might follow!

I had always imagined that being chosen by God meant enjoying His special favour. I thought saints were people whose lives were extraordinarily holy, whose paths were somehow smoother, and whose closeness to God made life gentler. Then I began reading their stories more closely.

And I began to discover that 'BEING CHOSEN' does not mean being spared; it means BEING SHAPED. I looked at St. Peter, who denied Jesus yet was lovingly entrusted with a mission. I looked at St. Paul, whose extraordinary calling led him through rejection, imprisonment, and hardship. I thought of St. Teresa of Calcutta, whose life of loving service included deep spiritual struggles. Their holiness did not mean they escaped pain. **They kept allowing God to work through their humanity, their struggles, and their sacrifices.** *Slowly, my understanding began to change.* Perhaps God's favour is not always seen in how comfortably life unfolds, but in how grace transforms us through it.

Of course, not every hurt comes from God, and we need not pretend that injustice does not hurt. But even in the wounds we never asked for, God can teach us something beautiful. Undeserved criticism can teach us humility without stealing our self-worth. Betrayal can deepen our wisdom without making us bitter. Pain can make our hearts more tender towards the silent struggles of others.

Perhaps God does not waste our tears; perhaps He teaches our hearts to love more deeply through them.

I am still learning. I still wish some lessons came wrapped in softer packaging! I still struggle, question, and sometimes wonder why certain things happen. But little by little, I am learning to pray differently…not only, *"Lord, take away this pain,"* but also, *"Lord, please do not let this pain make me less loving."*

This is what makes **All Saints' Day** so

personal and beautiful to me. The saints are no longer distant figures with halos, standing on unreachable pedestals. They are reminders that holiness grows in real people, through ordinary days, difficult experiences, humble beginnings, and countless small acts of love and sacrifice.

Perhaps the holiest people are not those who never break down, but those who choose kindness instead of bitterness, forgiveness instead of revenge, humility instead of pride, love even when love is difficult….**and who keep turning towards God with their broken pieces!**

This **All-Saints' Day**, I do not simply pray to become a better person. I pray to become a heart that God can shape…*a heart that grows softer through suffering, kinder through disappointment, and more compassionate through its own wounds.*

"Lord, when I ask You to use me, give me the courage to trust Your work within me. Let my trials make me tender, not bitter; wiser, not cynical; and more loving, not less. Make me holy - not by giving me a perfect life, but by making my heart more like Yours."

Because perhaps 'BEING CHOSEN' is not about receiving a trouble-free life. Perhaps it is about allowing God to bring something beautiful out of the life we are given.

HAPPY ALL SAINTS' DAY! May we have the courage to become saints - not perfect people who never struggle, but ordinary people who keep choosing love, one day, one difficulty, and one little *yes* to God at a time.

Sr. Rekha Punia, UMI,
Greater Noida

✦✦✦✦✦✦✦

Unless You Become Like Little Children



"Unless you change and become like little children, you will never enter the kingdom of heaven." Matthew 18:3

November gently invites us to pause and remember the saints and our departed loved ones who lived with faith, simplicity and trust in God. In this month of remembrance, Jesus gives us a beautiful invitation: **"Become like little children."** Jesus is not asking us to become childish. He invites us to rediscover the heart of a child- a heart that trusts, forgives, wonders, hopes and loves sincerely.

A Child Knows How to Trust: When a little child holds a parent's hand while crossing a busy road, the child does not calculate every danger. The child simply trusts. Similarly, we may not always understand the struggles, disappointments and unexpected changes in our lives. We may wonder why our prayers remain unanswered or why certain people leave us. Faith does not always give us explanations; sometimes it simply gives us a hand to hold. To become like a child is to say, **"Lord, I do not understand everything, but I trust You. Hold my hand and lead me."**

A Child Knows How to Begin Again: Watch a child learning to walk. The child falls, gets up and tries again. There is no shame in falling. Yet, as adults, we often allow our mistakes, failures and painful experiences to imprison us. We forget that every new day is another opportunity to begin again. God does not ask us never to fall; He invites us to rise with courage and continue our journey. **Falling is not the end; with God's grace, every fall can become a new beginning.**

A Child Knows How to Forgive: Children may quarrel in the morning and play together again in the afternoon. We adults, however, sometimes carry invisible notebooks in our hearts, recording every hurt and disappointment. Slowly, resentment takes

away our peace. Forgiveness does not mean that the hurt was acceptable; it means refusing to let bitterness control our lives. The childlike heart prays, **"Lord, help me release what I cannot change and give me the grace to love again."**

A Child Knows How to Wonder and Love: A child finds joy in a flower, a smile, a story or a simple gift. As we grow older, we often become so busy noticing what is missing that we forget to appreciate what we have. The childlike heart sees God's presence in ordinary moments and whispers, **"Thank You, Lord, for another day."**

A child also loves without calculating what will be received in return. Jesus invites us to serve without seeking recognition, give without demanding appreciation and do good even when nobody notices. This is the love that reflects the heart of Christ.

Becoming Little Again: The saints were not people whose lives were always easy or perfect. They were people who trusted God in uncertainty, persevered in difficulties, forgave when wounded and remained faithful even when the way ahead was unclear. Their lives remind us that holiness begins with a humble and trusting heart.

This month also reminds us of our departed loved ones. One day, we too will leave behind our positions, achievements and possessions. What will remain is the love we have shared, the goodness we have done and the faith with which we have lived. Before God, we are not defined by our titles or accomplishments, but by our identity as His beloved children.

Perhaps Jesus is gently calling us back to the essentials: **trust instead of fear, gratitude instead of complaint, forgiveness instead of resentment, simplicity instead of pride, and love instead of selfishness.**

Let us ask ourselves: Have I become too busy to notice God's blessings, too proud to apologise, too hurt to forgive or too anxious to trust? Perhaps this November is an invitation to return to simplicity, to hope and to God.

The greatest maturity in our spiritual life is not knowing everything, but knowing **Whom to trust**. May we place our hands in the hands of our Heavenly Father and whisper: *"Lord, I may not know where You are leading me, but I know that You are holding my hand. And that is enough."*

May we rediscover the child within us- the child who trusted, hoped and loved because the Father was near. May we return to that heart and return to that trust.

Sr. Lavina Dabre MSI,
Motinagar, Haldwani

✦✦✦✦✦✦✦

एक सपना..!



न रूकने की कोई जिद है, न थकने का कोई बहाना,
मंजिलों को चीर कर है, नया इतिहास बनाना।
सीना ताने खड़ा है देखो, यह नया जमाना,
तूफानों से टकराकर है, अपना हुनर दिखाना।

खून में उबाल है, आँखों में सपनों का पहरा,
छूना चाहता है हर कोई यह आसमाँ सुनहरा।
गिरकर संभलना, संभलकर फिर से बढ़ जाना,
यही तो है मेरे देश के नौजवान का तराना।

अंधेरों से लड़कर खुद एक दीया जलाना है,
हर एक ठोकर को अपनी सीढ़ी बनाना है।
मंजिल दूर सही, पर कदम नहीं रुकेंगे अब,
पूरी दुनिया में अपना परचम लहराना है!

मान्या पांडे,
संत एंथोनी इंटर कॉलेज,
ज्योलिकोट

Experience of Being a Child of God



My experience of being a child of God has been one of the most beautiful feeling which I developed as I grew in faith day by day. When I was in the protecting atmosphere of a family where I depended mostly on my parents and my own capacities then, I couldn't understand what is it all about. There was a moment in my life where I had to face a problem my own, a moment where I felt no one is there to support me, there God spoke to me in a rare voice, where I decided to turn to him, and realized his love, grace and care. There I understood what it mean to be a child of God.

During that period, I shared to Him, everything that was troubling me. I told Him about my fears, anxieties and the things I could not understand. Although my circumstances did not change for few years, I began to experience a sense of warmth within me. It felt as though God was reminding me that I was not alone. I am beloved to Him and that I could trust Him even when I did not understand what was happening around me. As I continued to cling on to him. I understood that being a child of God did not mean that I would never experience pain, disappointment, or failure. Rather, it meant that I could face those experiences with the assurance that God loved me and would help me find the strength to move forward.

This experience also changed the way I looked at myself and others I began to understand that my worth did not depend on what people thought of me or how successful I appeared to be: Instead. I found comfort in knowing that I was loved by God. This gave me the courage to accept my weaknesses, learn from my mistakes, and ask for forgiveness whenever I went wrong. I also became more conscious of how I treated other people. I realized that if I wanted to live as a child of God. I needed to show love, kindness, patience, and forgiveness to those around me, even when it was difficult.

As time passed, I noticed that my attitude towards life was gradually changing. I became more willing to trust God's plans, even when things did not happen according to my expectations. There are certain things I have been praying to God consistently for years. Yet, I learned to be patient and to remember that I could not always understand His timing. Whenever I felt anxious about the future, I reminded myself to place my worries in His hands. Whenever I experienced a blessing, I tried to acknowledge His goodness with a grateful heart. My faith did not remove every problem from my life, but it gave me hope and strength to face each day with greater confidence.

Looking back on this experience, I realize that being a child of God is a journey of continuous growth. I am still learning to trust Him completely. I know that I am not perfect, but I am grateful that I can approach Him with an honest heart and depend on His grace. My experience has taught me that the greatest blessing of being a child of God is knowing that I am loved, guided, and never forgotten by Him.

Today, I carry this understanding with me wherever I go. Whenever I face challenges, I remember the peace I found when I turned to God. Whenever I feel weak, I remind myself to seek His strength. And whenever I am tempted to lose hope, I remember that my life is in His hands. My experience of being a child of God has taught me that true peace does not come from having a perfect life but from trusting the One who walks with me through every season of life. I am deeply grateful to God for His love and faithfulness, and my greatest desire is to continue growing in Him and living a life that brings glory to His name.

Sr. Smitha FCC, Lucknow

The Communion of Saints: Holiness in Every Age



"If one member suffers, all suffer together with it; if one member is honoured, all rejoice together with it." (1 Cor 12:26) these words of St. Paul find profound meaning when we reflect on the communion of the saints in the image of the Church as the Body of Christ in the Christian understanding. As the liturgical year draws to a close, the Church invites the faithful to reflect more deeply on the eschatological realities of Christian life, namely death, resurrection, the final destiny of humanity, and the hope of life everlasting. This reflection finds a special expression in the month of November, when the Church commemorates All Saints and All Souls and professes her faith in the communion of saints, the forgiveness of sins, the resurrection of the body, and life everlasting. Among these articles of the Creed, the communion of saints holds a particularly profound significance because it reveals the Church as one family of God, united in Jesus Christ beyond the boundaries of earthly life and death. Catholic theology traditionally speaks of three states of the one Church: the Church MILITANT, Church SUFFERING, Church TRIUMPHANT or communion with the saints.

The communion of saints expresses the spiritual solidarity that binds all these members together in the love of God. The faithful on earth remember the saints in heaven intercede for the pilgrim Church and encourage her members through their example of holiness. The celebration of All Saints reminds the faithful that holiness is the vocation of every Christian and that the saints are not distant figures but members of the same spiritual family. The communion of saints assures the Church Militant that she does not journey alone, for she is sustained by the prayers of the saints, united in charity with the faithful departed, and strengthened by the hope of the resurrection. Ultimately, this communion finds its source and centre in Jesus Christ, through whom all the faithful, living and departed, are called to share in the eternal life of the Triune God.

The Catholic Church honours the saints, remembers their lives, seeks to imitate their virtues, and asks for their intercession. Such devotion is different from the worship that belongs to God alone. Their lives remind us that God's grace can transform human weakness into a witness of faith, hope, and love. Mary, the Mother of Jesus, occupies a unique place in the communion of saints. Their witness is particularly relevant in a world marked by violence, poverty, discrimination, religious intolerance, and social division.

Holiness of the saints is a mystery: The Church is not merely a visible institution or an organisation of believers. She is a divine mystery, rooted in the love of the Father, established through the saving mission of Jesus Christ, and animated by the Holy Spirit. Through Baptism, Christians become members of the Body of Christ and are called to share in his life, mission, and holiness. Within this mystery, the saints hold a special place because their lives reveal the transforming power of God's grace. They show that the holiness of the Church is not simply an ideal but a reality that becomes visible in the lives of those who faithfully follow Christ. The saints help us understand this mystery because they reveal what happens when human lives are transformed by divine grace. Their holiness is not separate from the holiness of the Church but is one of its most beautiful expressions. Christ remains at the centre of this communion. The saints do not replace Jesus Christ or compete with his unique role as the Redeemer. Their holiness

comes entirely from their participation in the life of Christ.

Call to sainthood: Every age gives rise to saints who respond to the particular needs and challenges of their time. St Francis of Assisi embraced poverty, simplicity, and care for creation in an age when his radical witness was urgently needed. St Teresa of Calcutta lived and served among the poorest of the poor in Kolkata, making God's love visible through her care for the abandoned and the dying. In our digital age, St Carlo Acutis, a young Italian who used the internet to share his faith and document Eucharistic miracles, offers a powerful example of how modern technology can become a means of evangelisation. These saints lived in different historical periods and social settings, but each responded to God's call through the circumstances in which he or she lived. Their holiness was not separated from the world around them. God calls people to holiness in every generation, and each age needs witnesses who can make Christ's love present in ways that speak to its particular struggles and hopes. Holiness can grow in a family, a parish, a classroom, a hospital, a workplace, or even through responsible engagement with the digital world. The call to holiness remains the same, but its expression changes according to the needs of the time and place. Every generation, needs saints who recognise the signs of their times and respond to them with faith, courage, compassion, and love.

Fr. Ajay Lobo, Bangalore

✦✦✦✦✦✦✦

The Joy of Being a Child of God



There is something beautiful about being a child. A child finds joy in simple things, trusts easily, forgives quickly, and runs into the arms of someone who loves them without fear. The child does not need to understand everything before trusting; the child simply knows, "I am loved." Perhaps this is why Jesus invites us to rediscover the heart of a child in our relationship with God.

Jesus tells us, "Unless you change and become like children, you will never enter the kingdom of heaven" (Mt 18:3). Becoming like children does not mean being childish or irresponsible. Rather, it means having a heart filled with trust, humility, simplicity, and openness to God. Just as a child depends on loving parents, we are called to recognise our daily need for God.

Pope Leo XIV reminds us that the Our Father teaches us to approach God with childlike simplicity, trust, and the certainty of being loved. When we call God "Our Father," we discover our true identity as His beloved children. As St. Paul says, "You have received a Spirit of adoption, through which we cry, 'Abba, Father!'" (Rom 8:15). Our relationship with God is not based on fear, but on the joyful confidence that we belong to Him.

This trust does not mean that life will always be easy. We experience difficulties, disappointments, failures, and uncertainty. Yet, like a child who turns to a loving parent in joy and sorrow, we can bring everything to God. Jesus assures us, "Ask and it will be given to you; search, and you will find; knock, and the door will be opened to you" (Lk 11:9). We may not understand the road ahead, but we can trust the One who walks with us.

This childlike trust lies at the heart of St. Thérèse of the Child Jesus's spirituality. Her Little Way teaches us to acknowledge our weakness and place ourselves completely in God's loving hands. She compared herself to a little child unable to climb the stairs alone and wrote of Jesus: "The elevator which must raise me to Heaven is Your arms, O Jesus!" She

teaches us that holiness does not depend on extraordinary achievements, but on doing ordinary things with extraordinary love.

Pope Francis beautifully expressed the heart of her spirituality: "It is confidence and nothing but confidence that must lead us to Love." A smile, a kind word, patience, forgiveness, prayer, and a small act of service can all become expressions of our love for God.

The Psalmist expresses this peaceful trust: "I have calmed and quieted my soul, like a weaned child with its mother" (Ps 131:2). This is the peace of a heart that learns to rest in God rather than trying to control everything. The Lord also assures us, "I hold your right hand; it is I who say to you, 'Do not fear, I will help you'" (Is 41:13).

As adults, we sometimes lose the simplicity of childhood. We become anxious about tomorrow, afraid of failure, and burdened by worries. Jesus calls us back to the joyful certainty that we are God's children and that our Father is always with us.

Being a child of God also changes how we treat others. When we pray "Our Father," we recognise that we are brothers and sisters. The love we receive from God must become visible through kindness, compassion, patience, mercy, and forgiveness. Jesus commands us, "Love one another as I have loved you" (Jn 13:34). Thus, our ordinary lives become a mission through which we bring God's love into our families, communities, parishes, and workplaces.

The joy of being a child of God goes beyond happiness that depends on circumstances. It is the deep confidence that we are loved, that we belong to God, and that we are never alone. When we fall, He helps us rise; when we are afraid, He strengthens us; and when we do not know the way, He continues to guide us.

As we journey through life, may we learn from Jesus to pray with confidence and from St. Thérèse to trust like little children. May we approach our heavenly Father with simplicity, joy, and faith, remembering the words of Scripture: "See what love the Father has bestowed on us, that we may be called children of God. Yet so we are" (1 Jn 3:1).

This is the joy of being a child of God: I am small, but I am loved. I may not know what tomorrow holds, but I know who holds me. I do not have to be afraid, because I am my father's beloved child.

Sr. Ibarisha Lyngdoh Lyngkhoi VSDB,
Isainagar

✦✦✦✦✦✦✦

बेटी बोझ या उड़ान?



बेटी हूँ मैं, मुझे समझो, मेरे भी अरमान हैं,
मेरी हँसी में खुशियाँ हैं, मेरी आँखों में जहान है।
जीवन मेरा आसान नहीं, फिर भी दिल में जान है,
बेटी होना कमजोरी नहीं, ये मेरी पहचान है।
पापा जैसा प्यार मिले, हर रिश्ता वैसा हो,
जहाँ सम्मान मिले मुझे, हर दिल में उजाला हो।
ना डर हो, ना रोक-टोक, ना कोई बंधन भारी हो,
हर बेटी अपने सपनों की खुद मालिक और अधिकारी हो।
मैं किसी पर बोझ नहीं, मैं खुद अपनी ताकत हूँ,
अपने फैसले लेने वाली, अपने सपनों की हिम्मत हूँ।
मुझे पंख दो, राह नहीं-मेरी उड़ान को आसमान दो,
मैं जो बनना चाहूँ जीवन में, बस उतना अधिकार दो।
बेटी को बचाना ही नहीं, उसे पढ़ाना भी है,
उसके सपनों को समझकर, आगे बढ़ाना भी है।
वो घर की शान भी है और देश की पहचान है,
बेटी को आजादी देना ही सच्चा सम्मान है।

कु0 सांघी पवार, काशीपुर

Advent – A Joyful Waiting



Introduction: We live in an 'instant' world – pursuit for quick access and quick outcome! Looking for immediate answers, quick solutions and control over our circumstances are its variants. The reality has pushed 'waiting' to the periphery, resulting in burglary of joy from human life. The season of Advent proposes precisely the opposite – a waiting with joy for the coming of the Lord. It enlivens our hope and invigorates our trust in the faithfulness of God who comes to meet His people, namely, to bring us salvation for which our God assumes human flesh at the Christmas, an event that follows Advent. How could we make room for the Lord who brings light into our darkness and joy into our heart, while we wait for Him with joy? We reflect on this aspect theologically, Christologically, spiritually, and personally. The object of the reflection is to learn to wait, wait joyfully not merely for the Lord but in all circumstances and areas of one's life.

Theologically, Advent celebrates God's faithfulness to His promises and His plan of salvation. God responds to the cry of His people that waited for a saviour who would take the yoke off their neck (Is 10:27). He sends His only Son for our salvation (Mt 21:37). It has been a waiting with hope and patience; hence, a waiting with joy as well. Advent teaches us to trust that God is at work even when we cannot see the fulfilment of his promises. Our task is to wait, wait joyfully.

Christologically, Advent places Jesus Christ, Emmanuel – God-with-us – at the centre of our waiting. Just as the people waited for the Messiah, God waits for us with supreme patience. God did not give up on us. The Incarnation marks God's entry into human history, which is also a sharing of our joys, sorrows and struggles. God's Son actualized the Father's plan; he guaranteed that we are never abandoned, even in moments of pain and uncertainty. He recognizes every human effort to wait joyfully, and rewards it with light into our darkness and joy into our heart.

Spiritually, Advent invites us to cultivate patience, prayer and conversion. Mary teaches us to trust God's plan through her faithful "yes" (Lk 1:38), while John the Baptist calls us to prepare the way of the Lord through repentance and renewed commitment. Prayer, silence, Scripture and reconciliation help us open our hearts to God's voice. Waiting becomes fruitful when we allow God to transform our craving for anything that is 'instant'. God enlivens our hope and invigorates our trust.

Personal Reflection: Making Room for Christ in My Life: The people of Israel waited for the Lord; the Lord waits for His people / us. Do I wait joyfully for the Lord? My waiting demands that I make room in my life for the one I wait, just as Mary did (Mk 2:19). This would mean (i) taking to the Lord our hopes, fears, desires… such as, a waiting for healing, peace in my family, clarity about my future, reconciliation with someone, strength to overcome a difficult situation…; (ii) becoming a source of hope through simple acts of kindness, compassion and service; (iii) undergoing a personal conversion – to forgive those who have hurt me, seek forgiveness when I have caused harm, offer time to someone who feels lonely and share my blessings with those in need; (iv) ensuring that my relationships and daily choices reflect God's love; (v) trusting God even when the wait is too long and I cannot understand His plans; (vi) keeping uncertainty away that steals my joy, and striving to transform the waiting period into an opportunity for deeper faith and spiritual growth. The Immanuel enhances my waiting with His very joyful

presence.

Conclusion: Advent invites us to rediscover the profound connection between waiting, hope and joy. Theologically, it assures us of God's faithfulness – God waits for me. Christologically, it directs us towards Jesus, Emmanuel, who enters our human condition – he transforms my hopeless into hope. Spiritually, Advent shapes in patience, prayer and conversion, the prerequisite and consequence of which is joyfulness. Personally, Advent calls us to welcome Christ into every dimension of our life.

Concretely, waiting with joy during the Advent season means becoming a source of hope and joy for those around us. We prepare the way of the Lord when we forgive someone who has hurt us, listen patiently to a lonely person, accompany someone who is suffering, share with those in need and work for justice and peace. A heart that waits with joy is a heart willing to be changed by the One for whom it waits.

As we approach the season of Advent, may we learn the art of waiting in faith, for God, who waits for us always; may we realize that God's promises unfold according to divine wisdom and not always according to our timetable; may our waiting become prayer, our hope become service; our expectations become a joyful witness. Then Christmas will be more than an annual celebration; it will become a renewed encounter with the living Christ, who transforms our waiting into hope and fills our hearts with lasting joy.

Sr. Helen UFS, Nawabganj

✦✦✦✦✦✦✦

To Be Like Children



"Unless you change and become like little children, you will never enter the kingdom of heaven." Matthew 18:3

The Beauty of a Childlike Heart: In our journey through life, we often strive to become more knowledgeable, successful, powerful, and independent. We want to prove ourselves, gain recognition, and earn the respect of others. Yet, in the midst of these ambitions, we sometimes lose the beautiful qualities that make our hearts simple and sincere. One day, the disciples asked Jesus, "Who is the greatest in the kingdom of heaven?" Jesus called a little child and placed the child among them. While the disciples were concerned about greatness and position, Jesus taught them that true greatness begins with humility.

To be like children does not mean becoming childish or irresponsible. It means recovering the qualities of childhood that bring us closer to God: trust, forgiveness, humility, sincerity, and a willingness to learn. God does not ask us to become less mature; He asks us to become more humble, more loving, and more dependent on Him.

A child teaches us the beauty of trust: Have you ever noticed how a little child holds a parent's hand while crossing a busy road? The child may not understand the dangers surrounding him, but he walks confidently because he trusts the one holding his hand. In the same way, God invites us to trust Him even when we cannot understand His plans. We may worry about our future, our failures, and our unanswered prayers, but faith means taking the next step while placing our lives in His hands. Trusting God does not mean avoiding responsibility; it means doing our best while believing that He will guide us.

A child also teaches us forgiveness: Children may argue over small things, yet they can return to playing together without carrying

resentment for years. As adults, we often hold on to painful memories, hurtful words, and past disappointments. Forgiveness does not mean pretending that the hurt never happened. It means refusing to let bitterness control our hearts. When we forgive, we create space for peace, healing, and new beginnings.

Consider a simple story. One evening, a little girl was helping her mother prepare the dinner table. She picked up a glass of water and carefully began carrying it towards the table. Suddenly, she stumbled, and the glass fell to the floor and shattered. Frightened, she looked at her mother with tears in her eyes and said, "Mummy, I am sorry. I wanted to help you, but I broke the glass." Her mother came closer, checked whether she was hurt, and gently embraced her. "The glass is broken, but you are safe. We can clean it up. Next time, we will be more careful."

The little girl felt relieved. She had made a mistake, but her mother's love gave her the courage to admit it and learn from it.

This simple story reminds us of an important spiritual truth. When we make mistakes, we often try to hide them, blame others, or make excuses because we fear being judged. Yet God invites us to approach Him with honesty and humility. He does not ask us to pretend that we are perfect. He asks us to acknowledge our failures, seek forgiveness, make things right, and begin again. Our mistakes do not have to define our future; they can become opportunities for growth when we face them honestly.

Just as the mother corrected her daughter without rejecting her, God's mercy invites us to return to Him with sincere hearts. His forgiveness is not permission to repeat our mistakes, but an opportunity to change and become better.

Children also remind us how to love sincerely: A warm embrace, a handmade gift, or a simple act of kindness can express love more beautifully than expensive presents. As we grow older, we sometimes expect appreciation for everything we do. We help others because we want recognition and become disappointed when our kindness is not returned. Jesus calls us to love without constantly calculating what we will receive in return. True greatness is not measured by how many people admire us, but by how many people experience God's love through us. Moreover, children remain curious and willing to learn. They ask questions and explore the world without pretending to know everything. Unfortunately, pride can make us resistant to correction. We may consider admitting a mistake a sign of weakness. But genuine humility means recognising our strengths without becoming arrogant and acknowledging our weaknesses without losing hope. We must remain teachable, grateful for life's simple blessings, and willing to grow each day.

As we grow older, let us not allow pride to replace humility, fear to replace faith, or resentment to replace love. Let us become childlike in our trust, generous in forgiveness, sincere in our relationships, and faithful in our service. The world may teach us to become bigger, richer, and more powerful, but Jesus reminds us that the path to true greatness begins with a humble heart.

May we never become so experienced that we stop learning, so successful that we forget to serve, or so wounded that we lose the ability to love. For the real measure of our lives is not simply how much we achieve, but how closely we grow to the heart of Christ.

"Whoever becomes humble like this child is the greatest in the kingdom of heaven." (Mt 18:4)

Nisha John Masih,
Bareilly

A Dream, A Journey, A Blessing



Born and brought up amidst the beautiful hills of Ranikhet, I grew up with a dream in my heart - to become a doctor and dedicate my life to serving humanity. I completed my Senior Secondary education from Army Public School, Ranikhet, and from there began a journey filled with hopes, challenges and determination.

The path was not always easy. There were many difficulties, moments of uncertainty and times when I wondered whether my dream would ever become a reality. But I held on to my faith, worked hard and continued moving forward, believing that God had a purpose for my journey.

Today, as I have successfully completed my MBBS, and proudly fulfilled my dream of becoming a doctor, my heart is filled with immense gratitude to Almighty Jesus, whose grace, strength and guidance carried me through every challenge.

I sincerely thank the Bishop of the Diocese of Bareilly, all the Fathers and Sisters, and especially my family, whose prayers, love, sacrifices and constant encouragement gave me the strength to persevere. This achievement is not mine alone; it is the result of the love and support of everyone

who believed in me.

To the youth, I would like to say: Dream big, trust in God, work hard and never give up. Your circumstances may make the journey difficult, but they can never determine the height of your dreams. Every obstacle can become a stepping stone if you face it with faith, courage and perseverance.

My journey to becoming a doctor has taught me that when faith, hard work and determination come together, dreams can become reality.

May I inspire the youth to dream boldly, to believe in themselves, trust God's plan and never stop pursuing their dreams. And when they achieve their goals, may they use their success to serve others with compassion, humility and love.

To God be all the glory!

Dr. Christina Patrick, Ranikhet

(डॉ. क्रिस्टीना पैट्रिक रानीखेत के संत बोनावेंचर पल्ली की सदस्य हैं। इन्होंने स्थानीय कैनोसा विद्यालय में अपनी प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। सफलतापूर्वक चिकित्सा शास्त्र में डाक्टरेट हासिल करने के शुभ अवसर पर बरेली धर्मप्रांत की ओर से लाखों शुभकामनाएँ– सम्पादक)

✦✦✦✦✦✦✦

बाल दिवस की बहार



आई बाल दिवस की बहार,
खुशियों से महका संसार।
प्यारे–प्यारे बच्चों की टोली,
जैसे मीठी मिश्री–बोली।

चाचा नेहरू को याद करें हम,
फूल गुलाब उन्हें अर्पण।
बच्चों से था उनको प्यार,
जैसे नदिया से हो सागर अपार।

बालक देश की शान हैं प्यारे,
आसमान के चमकते सितारे।
इनकी हँसी से जगमग संसार,
इनमें बसता है रब का प्यार।
इनको पढ़ाएं, इनको बढ़ाएं,
राह प्रगति की इन्हें दिखाएं।
देश का भविष्य उज्ज्वल बनाएंगे,
हर चेहरे पर मुस्कान लाएंगे।

रुद्र शर्मा,
संत एंथोनी इंटर कॉलेज,
ज्योलिकोट

आगमन काल की आनन्दमय आशा

आगमन काल आशा का समय है। उस परिवार की कल्पना कीजिए जहाँ पहले शिशु का जन्म निकट है। सब कुछ उस क्षण के चारों ओर परिक्रमा कर रहा है। "जब यह शिशु संसार में आयेगा..." परिवार के सभी निर्णय, सभी खर्च, भविष्य की सभी योजनाएं इसी आशा से आरम्भ होते हैं। सब के मुख पर मुस्कान है और हर दृष्टि में यह प्रश्न, "तब क्या-क्या होगा..." चिन्ता शायद केवल माँ को है। उसने चुपचाप कितनी बार यह प्रार्थना की होगी, "प्रभु, सब कुछ ठीक हो जाने देना।"

आगमन काल के समय कलीसिया की मनोदशा भी कुछ इसी प्रकार की होती है। सब कुछ इतिहास के उस क्षण की साज-सज्जा में लगा रहेगा जब ईश्वर अपने एकमात्र पुत्र को मानव-रूप में इस संसार में भेजेंगे। हम में से अधिकतर जिन्होंने ख्रीस्तीय परिवारों में जन्म लिया है, मानव इतिहास की इस घटना का महत्व भूल जाते हैं। समस्त 'पुराना विधान' उस मुक्तिदाता की तैयारी का एक लम्बा समय है जिसके आगमन का वादा हमारे प्रथम पूर्वजों से अदन की वाटिका में किया गया था। इब्राहीम और मूसा, नबियों और राजाओं को समय-समय पर भेजा गया कि वे ईश्वर की चुनी हुई प्रजा को मानव इतिहास के उस कठिन और निर्णायक मोड़ की ओर ले जायें। इस तैयारी में पूजन विधि उन तीन महत्वपूर्ण व्यक्तियों पर केन्द्रित है जो हमें ख्रीस्त जयन्ती पर येसु के आगमन के लिए तैयार करते हैं- इसायाह, योहन बपतिस्ता और मरियम।

इसायाह: आगमन काल के प्रथम दो सप्ताहों में मिस्सा के लिए सभी पाठ इसायाह के ग्रन्थ से लिये गये हैं। यह नबी आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्द्ध में जन्मे। यूदा के दक्षिणी साम्राज्य को उसके शक्तिशाली पड़ोसी असीरिया से धमकी मिलती रहती थी। इसायाह ने देखा कि यूदा के जीवन को वास्तव में असीरिया की शक्ति से खतरा नहीं था परन्तु भय का मुख्य कारण था, उस राष्ट्र के पाप, ईश्वर की आज्ञा की अवहेलना और ईश्वर में उनके विश्वास की कमी। इसायाह ने लोगों को चेतावनी दी कि वे पाप का मार्ग छोड़कर भलाई, धार्मिकता और न्याय का जीवन जीएं।

इसायाह दाऊद के वंशज के आगमन की भविष्यवाणी भी करते हैं जो एक शान्ति के युग की स्थापना करके लोगों पर राज्य करेगा, "तुम्हारा ईश्वर कहता है 'मेरी प्रजा को सान्वना दो, सान्तवना दो'... यह आवाज आ रही है निर्जन प्रदेश में प्रभु का मार्ग तैयार करो। हमारे ईश्वर के लिए मरुस्थल में रास्ता सीधा कर दो। हर एक घाटी भर दी जाये। हर एक पहाड़ और पहाड़ी समतल की जाये।" (इसायाह 40:1-4)। वह मन-परिवर्तन के लिए आदेश देते हैं, ईश्वर के प्रेम और सुरक्षा में उन्हें पूर्ण और पुत्र-सुलभ विश्वास है।

उनके सन्देश लोगों को सान्त्वना व प्रेरणा देते हैं कि वे अपने माता और पिता समान ईश्वर के पास लौट जायें जो उनसे अपार और अनन्त प्रेम करता है।

योहन बपतिस्ता: इसायाह ने कहा था कि मसीह के आगमन के लिए लोगों को तैयार करने हेतु ईश्वर एक संदेशवाहक को भेजेंगे। अब योहन को भेजा जाता है, निर्जन प्रदेश में उस आवाज के रूप में जिसे प्रभु के लिए मार्ग तैयार करना है। इस समय के पाठ योहन के जन्म से सम्बन्धित हैं, एक बालक जो विश्वास और आशा दिलाता है और माता के गर्भ में ही जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था। योहन ने पश्चात्ताप के बपतिस्मा का उपदेश दिया। यर्दन नदी के तट पर उनकी येसु से भेंट हुई और उन्होंने येसु को भी बपतिस्मा दिया। स्वर्ग से आयी एक आवाज ने योहन के सामने येसु की वास्तविक पहचान भी प्रकट की। बाद में उन्हें बंदी बना कर कारागार में डाला गया परन्तु वह चाहते थे कि उनके अनुयायी येसु से मिलें और यह प्रश्न लेकर उन्हें येसु के पास भेजा: "क्या आप ही वह हैं जो आने वाले हैं?" येसु का उत्तर था कि वे योहन को जाकर बतायें जो कुछ उन्होंने देखा लोगों को चंगाई मिलना और दीन हीनों के सम्मुख सुसमाचार के उपदेश! येसु ने स्वयं योहन से बातें की उनका संयम, तप, उनकी सादगी और ईश्वर के लिए पूर्णत: उपलब्ध रहना, यही सब! वही नबी है जिनके आने की पूर्व घोषणा की गयी थी।

जब प्रधान याजक व कुछ वयोवृद्धों ने येसु से उनके अधिकार के विषय में प्रश्न किया तो येसु ने इस प्रश्न द्वारा उन्हें चुनौती दी: "योहन को बपतिस्मा देने का अधिकार कहाँ से प्राप्त हुआ?"

योहन बपतिस्ता ईश्वर व ख्रीस्त में पूर्ण विश्वास के प्रतिमान के रूप में हमारे सम्मुख उपस्थित होते हैं। उन्हें हमारे उद्धार के लिए भेजा गया था।

मरियम: स्वर्गदूत गाब्रिएल द्वारा मंदिर में जकरियस को यह संदेश दिया गया कि उनकी वयोवृद्ध पत्नी एलिजाबेथ को एक पुत्र उत्पन्न होगा और वह उसका नाम योहन रखें। इस घटना के छ: माह बाद वही स्वर्गदूत मरियम के पास आता है, इस संदेश के साथ: "आप गर्भवती होंगी, पुत्र प्रसव करेंगी और उनका नाम येसु रखेंगी। वह महान होंगे और सर्वोच्च प्रभु के पुत्र कहलायेंगे।" (लूकस 1:31-32)

आगमन काल वह समय है जब हमें मरियम के निकट ही रहना चाहिए - जब वह अपने पुत्र के आगमन की तैयारी कर रही है, उनका हृदय ईश्वर के हृदय से संयुक्त है। वह अपने भीतर उस ईश्वर का अनुभव कर रही हैं जिसे उन्होंने गर्भ में धारण किया है।

हमारे लिए भी यह एक धन्य समय है जब हम में से प्रत्येक स्वयं में दिव्य उपस्थिति का अनुभव कर सकता है, उस पर चिन्तन कर सकता है। आइए, प्रभु येसु, आइए!

✦✦✦✦✦✦✦

स्व. श्रीमती सबर सिंह

कील



एक समय की बात है एंडी नाम का एक सज्जन व्यक्ति था। उसने शहर में जमीन खरीदी और उसमें अपने परिवार के लिए एक सुंदर घर बनवाया और हंसी खुशी अपने परिवार में रहने लगा। घर बहुत ही सुंदर था। सभी उसके घर की प्रशंसा करते थे।

एक रोज एक दुष्ट व्यक्ति उसके घर के पास से गुजरा। उसे एंडी का घर बहुत पसंद आया। वह वहां रुक कर घर देखने लगा, और घर में प्रवेश करने के लिए घंटी बजाई। एंडी घर के बाहर निकला। दुष्ट व्यक्ति ने एंडी से कहा, "महोदय, आपका घर बहुत सुंदर है क्या आप इसे मुझे बेचेंगे ?" एंडी ने कहा, "नहीं, यह सुंदर घर मैंने अपने और अपने परिवार के लिए बनाया है। मैं इसे नहीं बेचूंगा।" दुष्ट व्यक्ति वहां से चला गया। लेकिन हर महीने आकर वह एंडी से बार-बार यही पूछता की क्या आप अपने घर को बेचेंगे और एंडी मना कर देता।

एक दिन दुष्ट व्यक्ति पुन: एंडी के पास आया, और बोला, "महोदय, आपका घर बहुत सुंदर है। आप अपना पूरा घर मत बेचो। लेकिन मुझे एक कील ठोकने जितनी जगह दे दो और इसके बदले मुंह मांगी रकम ले लो।" एंडी को लालच आ गया। उसने दुष्ट व्यक्ति को कील ठोकने जितनी जगह दे दी और इसके बदले मुंह मांगी रकम ले ली। एंडी बहुत खुश था कि मैंने बहुत अच्छा सौदा कर लिया है। दुष्ट व्यक्ति ने एक बड़ी सी कील ली और एंडी के घर के एक कोने में ठोक दी और वहां से चला गया।

अगले दिन वह दुष्ट व्यक्ति आया और बड़े से थैली में कुछ सामान भरकर उस कील में टांग कर चला गया। एंडी मन ही मन मुस्कुराया की कितना पागल आदमी है। एक थैला टांगने के लिए उसने एक कील ठोकने जितनी जगह खरीदी है। तीन-चार दिन बीत गए। अब थैली में से गंदी बदबू आने लगी। एंडी ने झांक कर देखा उसमें मरे हुए जानवरों की खाल और बहुत सी गंदी चीजें थी। बदबू दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। दुष्ट व्यक्ति अपनी कील और थैला देखने के लिए आया तो एंडी ने उससे कहा, "महोदय, यह सब क्या है? कृपया यह बदबूदार थैला यहां से फेंक दीजिए। बदबू से मेरा और मेरे परिवार का दम घुट रहा है।" दुष्ट व्यक्ति बोला, "तुमने मुझे मुंह मांगी रकम लेकर मुझे यह कील ठोकने जितनी जगह दी है। अब यह मेरी जगह है। मेरी मर्जी मैं यहां पर क्या टाँगू।" धीरे-धीरे बदबू इतनी बढ़ गई कि एंडी और उसका परिवार बीमार पड़ने लगा। एंडी को मजबूरन अपना घर खाली करके अपने परिवार को दूसरी जगह रखना पड़ा।

इस प्रकार उसे व्यक्ति ने एंडी के पूरे घर पर अपना अधिकार कर लिया। शैतान की कार्यशैली इसी प्रकार होती है। वह आपको एहसास होने ही नहीं देगा कि वह आपका कुछ नुकसान करने वाला है। आप उसे अपना मित्र समझ बैठते है और शैतान धीरे धीरे आपकी आजादी, आपकी शांति और चैन बर्बाद कर चुका होता है।

शोभा, बाजपुर

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

एक और जुमला..?



आज देशभर में "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" का नारा बड़े गर्व के साथ दिया जाता है। मंचों से बेटियों के सम्मान, उनकी शिक्षा और उनके उज्ज्वल भविष्य की बातें की जाती हैं। सरकारें विभिन्न योजनाएँ चलाती हैं, जागरूकता अभियान आयोजित किए जाते हैं और यह संदेश दिया जाता है कि देश की बेटियाँ अब पहले से अधिक सुरक्षित और सशक्त हैं। लेकिन जब हम समाज की वास्तविक तस्वीर देखते हैं, तो एक ऐसा दर्दनाक सच सामने आता है जो हर संवेदनशील व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देता है। लगभग हर दिन किसी न किसी बेटी के साथ छेड़छाड़, बलात्कार, घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, मानव तस्करी या हत्या जैसी घटनाएँ सामने आती हैं। सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि यदि हमारी बेटियाँ वास्तव में सुरक्षित हैं, तो उनके साथ होने वाले अपराध रुक क्यों नहीं रहे? यदि कानून इतने सख्त हैं, तो अपराधियों के मन में उनका भय क्यों दिखाई नहीं देता?

एक बेटी जब घर से बाहर कदम रखती है, तो वह केवल अपने सपनों और मंजिल के बारे में नहीं सोचती, बल्कि सबसे पहले अपनी सुरक्षा के बारे में सोचने को मजबूर होती है। उसके माता-पिता तब तक निश्चिंत नहीं हो पाते, जब तक वह सुरक्षित घर वापस न लौट आए। स्कूल, कॉलेज, कोचिंग, कार्यस्थल, बाजार या सार्वजनिक परिवहन – ऐसी बहुत कम जगहें हैं जहाँ हर लड़की स्वयं को पूरी तरह सुरक्षित महसूस कर सके। कई बार उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध कपड़े बदलने, रास्ते बदलने, समय बदलने या अपने सपनों तक को सीमित करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। समाज में आज भी ऐसी मानसिकता मौजूद है, जहाँ अपराधी से अधिक सवाल पीड़िता से पूछे जाते हैं। उसके चरित्र, पहनावे और व्यवहार पर चर्चा होती है, जबकि अपराधी के कृत्य पर उतनी गंभीरता नहीं दिखाई जाती। इससे पीड़िता केवल शारीरिक ही नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी टूट जाती है। सबसे अधिक पीड़ा तब होती है, जब न्याय पाने के लिए उसे वर्षों तक अदालतों के चक्कर लगाने पड़ते हैं। कई मामलों में साक्ष्यों की कमी, लंबी कानूनी प्रक्रिया या प्रभावशाली लोगों के दबाव के कारण न्याय में देरी होती है। न्याय में देरी, कई बार न्याय से वंचित होने के समान महसूस होती है। ऐसे हालात अपराधियों का मनोबल बढ़ाते हैं और समाज में यह संदेश जाता है कि अपराध करने के बाद भी बच निकलना संभव है।

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति केवल ऊँची-ऊँची घोषणाओं, सरकारी योजनाओं और आकर्षक नारों से नहीं मापी जाती, बल्कि इस बात से मापी जाती है कि वहाँ की बेटियाँ कितनी सुरक्षित, सम्मानित, शिक्षित और आत्मविश्वास से भरी हैं। यदि कोई बेटी बिना किसी डर के दिन या रात में कहीं भी आ-जा सके, यदि वह अपने सपनों को बिना किसी भय के पूरा कर सके और यदि उसके सम्मान की रक्षा समाज स्वयं अपना कर्तव्य समझे, तभी हम सच्चे अर्थों में एक विकसित और सभ्य राष्ट्र कहलाने के योग्य होंगे। इसके लिए केवल सरकार की नहीं, बल्कि पूरे समाज की सोच बदलने की आवश्यकता है।

परिवारों में बेटों को बचपन से ही महिलाओं का सम्मान करना सिखाना होगा, विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को मजबूत करना होगा, कानूनों का निष्पक्ष और त्वरित पालन सुनिश्चित करना होगा तथा अपराधियों को ऐसी कठोर और समयबद्ध सजा मिलनी चाहिए कि कोई भी व्यक्ति किसी बेटी की ओर गलत नजर उठाने से पहले सौ बार सोचे। जब तक हर बेटी अपने घर, विद्यालय, कार्यस्थल और समाज में पूरी गरिमा, सम्मान और सुरक्षा के साथ जीवन नहीं जी सकेगी, तब तक "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" केवल एक सरकारी अभियान नहीं, बल्कि समाज के सामने खड़ा एक अनुत्तरित प्रश्न बना रहेगा। अब समय केवल संवेदना व्यक्त करने का नहीं, बल्कि ठोस बदलाव लाने का है। हमें ऐसा समाज बनाना होगा जहाँ किसी बेटी की चीख कभी जंगल का रुदन न बने, बल्कि उसकी मुस्कान, उसकी शिक्षा, उसकी सफलता और उसका सम्मान ही भारत की सबसे बड़ी पहचान बनें। क्योंकि किसी भी सभ्य समाज की सबसे बड़ी ताकत उसकी बेटियों की सुरक्षा, गरिमा और सम्मान में ही निहित होती है।

शिवांगी शर्मा, ईसाईनगर

हुनर की रोशनी

आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम
"जहाँ नारी को मिलता है अवसर और सम्मान
वहीं से शुरू होता है विकास और स्वाभिमान।"
गाँव-गाँव में आशा की किरण
लेकर पहुँचा जीवदान का चरण।
सीख का दीप जलाया ऐसा
हर मन में जागा नया विश्वास।
पीको, गड़ेरियाबाग, हरिपुर की धरती पर
खिले सपने हर बेटी और बहन के घर।
तीन महीनों की मेहनत रंग लाई
जीवन में नई मुस्कान फिर से छाई।
सिलाई की सुई बनी आत्मविश्वास की डोर
ब्यूटीशियन का हुनर बना उज्ज्वल भोर।
सीखते-सीखते बढ़ा उनका मान
आत्मनिर्भर बनने का मिला सम्मान।
अड़तीस बहनों ने सिलाई अपनाई
बारह बेटियों ने ब्यूटीशियन कला सिखाई।
कुल पचास जीवनों में आई नई बहार
खुल गए आत्मनिर्भरता के सुंदर द्वार।
आज अपने ही गाँव में काम कर रही हैं
मेहनत से नई पहचान गढ़ रही हैं।
1500 से 2000 की आय बन रही सहारा
परिवार के जीवन में आया उजियारा।
जीवदान सोशल वर्क सेंटर का यह प्रयास
बन गया अनेक परिवारों की नई आस।
हुनर के साथ मिला आत्मसम्मान
और जीवन को मिली नई उड़ान।
आइए, मिलकर ऐसा समाज बनाएँ
जहाँ हर बेटी अपने सपनों को साकार बनाए।
क्योंकि जब नारी होती है सशक्त और स्वावलंबी
तभी समृद्ध होता है परिवार, गाँव और पूरा देश।

✦✦✦✦✦✦✦

माँ तो सिर्फ माँ ही होती है



नौ माह तक कोख में रखती,
एक-एक साँस की रक्षा करती
खुद दर्द कष्ट को सहकर,
जीवन हमें देती है
वह माँ तो सिर्फ माँ ही होती है
बचपन जिसकी छाँव में खेलता,
प्रेम, स्नेह जिससे हमेशा मिलता
गलतियों से हमें बचाने के लिए,
सबके विरोध को सह जाती है
वह माँ तो सिर्फ माँ ही होती है
मन में कितनी चिंता रहती है,
फिर भी हँसती-मुस्कुराती है
नहीं किसी से कुछ भी कहती,
खुद ही सहती जाती है
परिवार का बोझ जिम्मेदारी,
हँसकर वह उठाती है,
वह माँ तो सिर्फ माँ ही होती है
माँ के कितने रूप निराले
कभी रसोईया, कभी धोबी,
कभी शिक्षक बन जाती है।
प्रेम, दया, ममता की मूरत
वह कितनी सुंदर दिखती है
वह माँ तो सिर्फ माँ ही होती है।
(बारगी बांध जबलपुर, घटना से प्रेरित)

सैमुअल प्रिंस,
मदर तेरेसा विद्यालय, करेली

प्रभु येसु किस प्रकार के राजा हैं?



जब हम राजाओं के बारे में सोचते हैं, तो हमारे मन में एक ऐसा व्यक्ति आता है जिसके पास शक्ति, धन, दौलत, सेना, राजमहल और उनके सेवक हो। लेकिन जब हम प्रभु येसु मसीह को राजा के रूप में देखते हैं, तो हमें एक बिल्कुल अलग तस्वीर दिखाई देती है। प्रभु येसु इस धरती के तमाम राजाओं में से एक राजा नहीं है। प्रभु येसु राजा राजेश्वर है। जब प्रभु येसु से पूछा कि क्या आप राजा हो तो उनका उत्तर था - हाँ मैं राजा हूँ। लेकिन मेरा राज्य यहाँ का नहीं है। अर्थात प्रभु येसु का राज्य संसार का नहीं है। इसलिए यह विषय और भी दिलचस्प बन जाता है। प्रभु येसु ऐसे राजा है, जो सिंहासन पर बैठकर शासन करने के बजाय क्रूस पर चढ़कर प्रेम से राज्य करते हैं। दूसरों से सेवा करवाने के बजाय वे स्वयं दूसरों की सेवा करते है। प्रभु येसु का शासन करने का हथियार तलवार नहीं बल्कि प्रेम, सत्य, क्षमा और बलिदान से लोगों के दिल पर राज करते हैं। प्रस्तुत लेख के द्वारा प्रभु येसु के राज्य का राज जानने तथा समझने की चेष्टा करें।

प्रभु येसु भय का नहीं- प्रेम का राजा है: प्रभु येसु हम सब को यह कहते हुए बुलाते हैं- तुम सब के सब मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा। इस बुलावे में सिर्फ प्रेम उमड़ता है। किसी भी प्रकार का डर या भय नहीं है। प्रभु येसु सभी लोगों को बहुतायत का जीवन देने के लिए स्वयं अपना जीवन सूली पर कुर्बान कर देते हैं। प्रभु येसु उस खोई हुई भेड़ को खोजने जाते हैं जिसे दुनिया बेकार समझकर छोड़ देती है। येसु पापियों को अपने पास बुलाते हैं। बीमार लोगों को चंगा करते हैं और टूटे हुए दिल को सांत्वना देते है। जो माता पिता अपने बच्चों को केवल डाँटते नहीं बल्कि उन्हें प्रेम और सही मार्गदर्शन देते हैं, वे मसीह के प्रेम को प्रकट करते हैं।

प्रभु येसु सेवा करनेवाले राजा हैं: संसार के राजाओं के सामने उसकी प्रजा अपना सिर झुकाती है। लेकिन प्रभु येसु ने स्वयं झुककर अपने शिष्यों के पैर धोए। प्रभु येसु हमें सिखाते हैं कि महानता दूसरों पर अधिकार जताने में नहीं, बल्कि दूसरों की भलाई करने में है। प्रभु येसु कहते हैं- "मानव पुत्र अपनी सेवा कराने नहीं, बल्कि सेवा करने तथा बहुतों के उद्धार के लिए अपने प्राण देने आया है।" (मत्ती 20:28) परिवार का मुखिया वह नहीं जो सबको अपने आदेशों से चलाए, बल्कि वह जो परिवार की जिम्मेदारियों को प्रेम से निभाए।

प्रभु येसु सत्य और न्याय के राजा हैं: पिलातुस के सामने येसु खड़े थे। उनके पास न सेना थी, न धन-दौलत, और न ही राजनीतिक शक्ति। फिर भी वे अपने मिशन और सत्य से पीछे नहीं हटे। प्रभु येसु कहते हैं- "मैं इसलिए जन्मा और इसलिए संसार में आया हूँ कि सत्य के विषय में साक्ष्य दूँ।" (योहन 18:37) पवित्र बाइबिल बताती है- "तुम सब से पहले ईश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज में लगे रहो।" (मत्ती 6:33)

येसु का राज्य इस संसार के राज्य जैसा नहीं हैं: पिलातुस ने येसु से पूछा कि क्या वे यहूदियों के राजा हैं। तब येसु ने उत्तर दिया- "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है।" (योहन 18:36) इसका अर्थ यह नहीं है कि येसु का राज्य संसार से बिल्कुल संबंधित नहीं है। इसका अर्थ है कि उनका राजत्व संसार की स्वार्थपूर्ण और हिंसक सत्ता की तरह नहीं है। वे संसार पर प्रभुत्व जमाने के लिए नहीं, बल्कि मनुष्यों को पाप से मुक्त सत्य में चलाने और ईश्वर से मिलाने आये हैं। उनका राज्य प्रेम, शांति, सेवा, न्याय और पवित्रता से पहचाना जाता है। संत पौलुस लिखते हैं- "ईश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा में धार्मिकता, शांति और आनन्द का विषय है।" (रोमियों 14:17) इसका मतलब है कि ईश्वर का राज्य केवल किसी स्थान, भवन या समारोह का नाम नहीं है। जब किसी परिवार में क्षमा होती है, वहाँ ईश्वर के राज्य की झलक मिलती है। जब दो शत्रु मेल-मिलाप करते हैं, वहाँ ईश्वर का राज्य प्रकट होता है। जब कोई भूखे को भोजन देता है और पीड़ित को न्याय दिलाने में सहायता करता है, तब ईश्वर के राज्य के मूल्य

संसार में दिखाई देते हैं।

येसु क्रूस के राजा हैं: जो काम प्रभु येसु ने क्रूस पर से किया वह काम कोई भी राजा नहीं कर सकता है। प्रभु येसु ने क्रूस पर कष्ट सहते हुए अपने शत्रुओं के लिए पिता परमेश्वर से क्षमा माँगी। क्रूस पर येसु ने अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करते हुए कहा- "पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं (लूकस 23:24)। क्रूसित येसु राजा हमें तीन बातें सिखाता है- 1) प्रेम का अर्थ केवल अच्छे लोगों से प्रेम करना नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी क्षमा करना है। 2) सच्ची शक्ति दूसरों को हराने में नहीं, बल्कि बुराई के सामने अच्छाई पर दृढ़ रहने में है। 3) बलिदान के बिना प्रेम अधूरा रह जाता है।

येसु का राज्य अनंत काल का राज्य है: दुनिया के राजा आते है और चले जाते हैं। उनके महल खंडहर बन जाते हैं, उनकी सत्ता समाप्त हो जाती है और उनका नाम धीरे-धीरे भुला दिया जाता है। लेकिन मसीह का राज्य अनंत है। दानिएल नबी के पुस्तक में हम पढ़ते है- "उसका प्रभुत्व अनंत है, जो कभी समाप्त नहीं होगा, उसका राज्य कभी नष्ट नहीं होगा।" (7:14) प्रकाशना ग्रंथ में हम पढ़ते है- "हमारे प्रभु और उसके मसीह को इस संसार का राज्य प्राप्त हो गया है। वह युग युगों तक राज्य करेंगे।" (11:15) इसका मतलब है कि हमारा जीवन केवल इस संसार की सफलता, धन-संपत्ति और प्रतिष्ठा तक सीमित नहीं है। हमें अपने जीवन को इस प्रकार जीना है कि हम ईश्वर के अनंत सुख राज्य के योग्य बनें।

येसु के राज्य का नागरिक कौन हो सकता है?: येसु राजा के राज्य का नागरिक केवल वह नहीं जो अपने आपको ईसाई कहता है, बल्कि वह है जो अपने जीवन में येसु के मूल्यों को अपनाने का प्रयास करता है। येसु के राज्य के मूल्य हैं- प्रेम, क्षमा, सत्य, सेवा, न्याय, शांति और विनम्रता। इसलिए हमें स्वयं से पूछना चाहिए- क्या मेरे घर में येसु का राज्य है? क्या मेरे व्यवहार में येसु का राज्य है? क्या मेरे शब्दों से दूसरों को शांति मिलती है या चोट पहुँचती है? येसु को राजा घोषित करना आसान है, लेकिन उन्हें अपने जीवन पर राज्य करने देना कठिन है। क्योंकि जब येसु राजा बनते है, तो हमारा अंहकार सिंहासन से उतरता है, हमारा स्वार्थ कमजोर पड़ता है, हमारी घृणा को क्षमा में बदलना पड़ता है और हमारे जीवन में प्रेम को स्थान देना पड़ता है।

प्रभु येसु ऐसे राजा हैं जो हमारे लिए मरे, ताकि हम नया जीवन पायें। उनका राज्य ऐसा राज्य है जहाँ प्रेम सबसे बड़ा नियम है, सेवा सबसे बड़ी महानता है, क्षमा सबसे बड़ी विजय है और सत्य सबसे बड़ी शक्ति है।

फा. फ्रांसिस पिन्टो, दाह फार्म

✦✦✦✦✦✦✦

Winners of Logos Bible Writing – 2026

Category – Religious			
Name	**Parish**	**Language**	**Position**
Sr. Jenitha SJT	St. Alphonsus Cathedral, Bareilly	English	**First**
Sr. Pavithra SJT	St. Alphonsus Cathedral, Bareilly	English	**Second**
Sr. Tersilla UMI	St. Theresa of Lisieux Church, Kathgodam	English	**Third**
Category - Laity			
Mrs. Soni Sunil	Our Lady of Immaculate Shrine, Bazpur	Hindi	**First**
Mrs. Kamla Samson	Our Lady of Lourdes Church, Nausar	Hindi	**Second**
Mrs. Malti William	Our Lady of Immaculate Shrine, Bazpur	Hindi	**Third**

समाचार दर्शन

क्रूसवीर दिवस

बाजपुर: 11 अक्टूबर 2026 को निष्कलंक माता गिरजाघर, बाजपुर में पल्ली में क्रूसवीर बच्चों के लिए मिस्सा बलिदान चढ़ाया गया। सर्वप्रथम बच्चों ने पवित्र क्रूस के साथ गिरजाघर में प्रवेश किया। मिस्सा बलिदान की सभी तैयारियाँ क्रूसवीर बच्चों के द्वारा की गई। पवित्र मिस्सा के दौरान बच्चों ने बालक येसु की संत तेरेसा के जीवन से निम्नलिखित शिक्षाएं ग्रहण की जैसे -

- प्रतिदिन सच्चे मन से प्रार्थना करना।
- ईश्वर पर हमेशा विश्वास रखना।
- सभी लोगों से प्रेम करना।
- छोटे-छोटे कार्यों को प्रेमपूर्वक करना।
- गरीबों और जरूरतमंदों की सहायता करना।
- क्षमा, विनम्रता और दया का भाव रखना।

मिस्सा बलिदान के उपरांत सभी क्रूसवीर बच्चों के लिए खेलकूद का आयोजन किया गया। हमारे पल्ली के पुरोहित फा. उदय, फा. रॉबर्ट, फा. जैफ, धर्मबहनों, धर्मशिक्षिकाओं व पल्लीवासियों ने खुशी के साथ इसमें भागीदारी दी। खेलकूद के उपरांत बच्चों को पुरस्कार वितरण किया गया और उसके बाद बच्चों को प्रीतिभोज दिया गया। सभी बच्चे हर्षोल्लास के साथ अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए।

फा. उदय, बाजपुर

✦✦✦✦✦✦✦

अनुभव युवा सम्मेलन 2026

बरेली: बरेली धर्मप्रांत के 400 से अधिक युवाओं ने चाइल्ड केयर बिशप कॉनराड विद्यालय परिसर, बरेली में 17 से 19 अक्टूबर तक आयोजित 'अनुभव युवा सम्मेलन 2026' के दौरान 'ICYM प्रो-लाइफ फॉर्मेशन' कार्यक्रम में भाग लिया। यह तीन दिवसीय सम्मेलन जीवन के सुसमाचार के आलोक में युवाओं के विवेक को आकार देने और उन्हें जीवन, प्रेम और पवित्रता की संस्कृति को अपनाने तथा उसे बढ़ावा देने के लिए सक्षम बनाने पर केंद्रित था। बरेली के धर्माध्यक्ष और CCBI युवा आयोग के अध्यक्ष, मान्यवर इग्नेशियस डिसूजा ने 18 अक्टूबर को पवित्र मिस्सा का अनुष्ठान किया और एक प्रभावी प्रवचन दिया। उन्होंने युवा प्रतिभागियों को अपने विश्वास को गहरा करने और अपने मसीही बुलावे को दृढ़ निष्ठा के साथ जीने के लिए प्रेरित किया।

प्रो-लाइफ फॉर्मेशन के मुख्य वक्ता श्री अजिन जोसेफ (CCBI पारिवारिक आयोग के सह-सचिव एवं प्रो-लाइफ सेवकाई के विशेष प्रभारी) और श्रद्धेय सि. पॉलिना मेलाइट MSMI थीं। सत्रों में युवाओं के सामने आने वाली कई समकालीन चुनौतियों पर चर्चा की गई, जिनमें 'शरीर का धर्मशास्त्र', मानव कामुकता का उद्देश्य, अश्लीलता (पॉर्नोग्राफी), हस्तमैथुन और इन संघर्षों से उबरने के उपाय, गर्भपात, इन-विट्रो फर्टिलाइजेशन (IVF), जेंडर विचारधारा और LGBTQ से जुड़े विषय शामिल थे।

पवित्र शास्त्र, कलीसिया की शिक्षाओं और व्यावहारिक मार्गदर्शन के माध्यम से वक्ताओं ने प्रतिभागियों को मानव व्यक्ति की गरिमा, पवित्रता की सुंदरता और जीवन को समर्थन देने वाले निर्णय लेने के महत्व को समझने के लिए प्रोत्साहित किया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य युवाओं के नैतिक विश्वास को मजबूत करना और उन्हें समकालीन सांस्कृतिक चुनौतियों का सामना विश्वास, स्पष्टता और करुणा के साथ करने के लिए तैयार करना था।

श्री अजिन जोसेफ द्वारा संचालित एक विशेष सत्र आंतरिक चंगाई, शारीरिक चंगाई और छुटकारे पर केंद्रित था, जिसमें पवित्रता पर विशेष जोर दिया गया। इस सत्र ने युवाओं को मसीह में चंगाई, स्वतंत्रता और नया जीवन खोजने के लिए आमंत्रित किया, साथ ही उन्हें तन और मन की शुद्धता अपनाने और ईश्वर के साथ अपने रिश्ते को प्रगाढ़ करने के लिए प्रेरित

किया। तीसरे दिन, सि. पॉलिना मेलाइट MSMI ने प्रतिभागियों को पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के लिए एक विशेष प्रार्थना सत्र में अगुवाई की जिसे आध्यात्मिक नवीनीकरण और अपने जीवन में पवित्र आत्मा के कार्यों के प्रति अधिक खुलापन लाने का अवसर प्रदान किया।

सम्मेलन को YU4C दिल्ली के 'डेविड्स हार्प गॉस्पेल बैंड' के जीवंत संगीत सेवाकार्य का सहयोग प्राप्त था, जिनकी स्तुति और आराधना ने पूरे कार्यक्रम के दौरान प्रार्थनापूर्ण और सहभागी वातावरण बनाए रखने में मदद की। इस कार्यक्रम का आयोजन बरेली धर्मप्रांत के युवा निदेशक फा. विजय टेल्लिस के नेतृत्व में धर्मप्रांतीय पुरोहितों, धर्मबहनों और ICYM धर्मप्रांतीय युवा कार्यकारिणी (DEXCO) के सदस्यों के सहयोग से किया गया था। उनके समर्पित प्रयासों ने तीन दिवसीय सम्मेलन का सुचारू संचालन सुनिश्चित किया।

'अनुभव युवा सम्मेलन 2026' युवा प्रतिभागियों के लिए एक गहन आध्यात्मिक और समृद्ध अनुभव साबित हुआ, जिसमें जीवन-समर्थक प्रशिक्षण (प्रो-लाइफ फॉर्मेशन), व्यावहारिक मार्गदर्शन, प्रार्थना और सहभागिता का संगम देखने को मिला। इस समागम ने युवाओं को जीवन के सुसमाचार का साक्षी बनने, मानव गरिमा, कामुकता और जीवन की पवित्रता पर कलीसिया की शिक्षाओं को अपनाने और इस सम्मेलन के सुफलों को अपने परिवारों, पल्लियों और समुदायों में ले जाने के लिए प्रेरित किया।

✦✦✦✦✦✦✦

फा. विजय टेल्लिस, शाहजहाँपुर

डर से आत्मरक्षा की ओर

पोलीगंज: अजीम प्रेमजी फाउंडेशन एवं बरेली धर्मप्रांतीय समाज सेवा केंद्र (BDSSC) के साझा सहयोग से पोलीगंज कार्यक्षेत्र के जनकपुरी एवं भौरिआई गांव में किशोरियों और बच्चों के आत्मविश्वास एवं भविष्य निर्माण हेतु 'उड़ान' परियोजना चलाई जा रही है। इसके अंतर्गत किशोरी समूह गठन के माध्यम से सामाजिक संकीर्ण सोच एवं रूढ़िवादिता से ऊपर उठकर शिक्षा, स्वास्थ्य, आय और अधिकारों के प्रति जागरूकता लाने हेतु विभिन्न गतिविधियों के द्वारा किशोरियों को आगे बढ़ने के अवसर और मंच प्रदान किये जा रहे हैं। परिणाम स्वरूप किशोरियों एवं उनके अभिभावकों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन नजर आने लगा है

बदलाव:- जो किशोरियां संकोच एवं डर के कारण घर से बाहर नहीं निकलती थीं वो अब विद्यालय, कॉलेज और नियमित बैठकों में सक्रिय सहभागिता निभाने लगी हैं। यही नहीं किशोरियों ने अपने सम्मान एवं सुरक्षा के लिए सुचेतना संस्था द्वारा संचालित 10 दिवसीय योग एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण में सक्रिय सहभागिता निभाई। यह प्रशिक्षण प्रशिक्षक श्री अश्विनी कुमार द्वारा दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए योग के कई अभ्यास सिखाए गए। उन्हें मुश्किल हालात में अपनी सुरक्षा करने के लिए आत्मरक्षा का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। आत्मरक्षा की जिन तकनीकों को सिखाया गया उनमें आउटर ब्लॉक, मिडिल पंच, अपर पंच, लोअर पंच, नी किक, लोअर किक, और अपर किक शामिल थे। इस प्रशिक्षण से किशोरियों ने मुश्किल हालातों में अपनी सुरक्षा करना सीख लिया है अब उनका आत्मविश्वास बढ़ गया है। किशोरियों का कहना है कि वह अब निडर होकर विद्यालय, कॉलेज और समाज में आ - जा सकती हैं।

राजीव रंधावा, पोलीगंज

✦✦✦✦✦✦✦

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण

करेली: ज्योति निकेतन आश्रम, करेली में 11 अक्टूबर 2026 को मदर तेरेसा मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी विद्यालय के सभागार में दृढ़ीकरण संस्कार का पावन समारोह सम्पन्न हुआ। पवित्र मिस्सा के दौरान आठ बच्चों ने पवित्र आत्मा का वरदान प्राप्त किया। लगभग 150 विश्वासी और बच्चों के माता-पिता इस भक्तिपूर्ण समारोह में उपस्थित थे। इस अवसर पर धर्माध्यक्ष ने बच्चों को प्रभावशाली प्रवचन दिया और पवित्र आत्मा के जीवन में महत्व को समझाया। उन्होंने बच्चों के जीवन को और अधिक सुन्दर व विश्वासमय बनाने के लिए उन्हें पवित्र बाइबिल भेंट की। भजन मंडली ने सुंदर भजन गाकर समारोह को और भी भक्तिमय बना दिया। पवित्र मिस्सा के बाद सभी ने प्रेम-भोज में भाग लिया।

आकांक्षा लकड़ा, करेली

सामाजिक सरोकार

पोलीगंज: सुचेतना समाज सेवा संस्था शाखा पोलीगंज के द्वारा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के सहयोग से उड़ान परियोजना का शुभारंभ 1 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस परियोजना के द्वारा पोलीगंज केंद्र के 18 गांव में किशोरी एवं बच्चों का शिक्षा स्वास्थ्य अधिकार आत्मविश्वास एवं भविष्य निर्माण के लिए समाज सेवा का कार्य शुरू किया गया। इसके अंतर्गत ग्राम हरकिशनापुर में संस्था के कार्यकर्ता नीरज कुमार सोनकर द्वारा 20 नवंबर 2025 को एक किशोरी समूह का गठन किया गया एवं दिसंबर माह में दूसरा किशोरी समूह का गठन किया गया। इसमें उनको विषय आधारित प्रशिक्षण एवं उनके भविष्य निर्माण और स्वास्थ्य पर प्रशिक्षण दिया गया। इसके अंतर्गत पोलीगंज केंद्र की समन्वयक सि. ललिता द्वारा 21 दिसंबर 2025 को किशोरी अधिकार एवं मौलिक अधिकार पर प्रशिक्षण दिया गया। 24 जनवरी 2026 को गांव में किशोरी शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए त्रिकोणीय बैठक की गई जिसमें एनपीआरसी सोमवीर वर्मा द्वारा किशोरी शिक्षा पर अभिभावकों एवं किशोरियों को समझाया गया एवं 7 मार्च 2026 को संस्था के कार्यकर्ता नीरज कुमार सोनकर द्वारा करियर परामर्श पर प्रशिक्षण दिया गया। इससे प्रभावित होकर सखी किशोरी समूह की अध्यक्ष हसमुख ने अपनी बहन को दोबारा से विद्यालय में पढ़ाने का निर्णय लिया। अपने माता-पिता को उसकी शिक्षा शुरू करने के लिए समझाया एवं समूह की अन्य किशोरियों ने भी खुशबू को पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। वह अपनी पढ़ाई करने के लिए सहमत हो गई। 10 जुलाई 2026 को खुशबू ने कौशल्या देवी विद्यालय पडरी में कक्षा 11 में अपना नामांकन कराया और वह प्रतिदिन विद्यालय जाकर अपनी पढ़ाई कर रही है। उसके जीवन में एक नई शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न हुई है। खुशबू के माता-पिता एवं किशोरी समूह की किशोरियाँ सुचेतना संस्था के आभारी है।

सि. ललिता MSJ, पोलीगंज

✦✦✦✦✦✦✦

जैविक खेती की ओर बढ़ रहे किसान

बंडा: सुचेतना समाज सेवा केन्द्र, बंडा द्वारा ग्रामीण गरीब किसानों को सशक्त बनाने के लिए जैविक खेती और बेहतर आजीविका कार्यक्रम चलाया जा रहा है। शुरुआत में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। किसान रासायनिक खेती छोड़ने को तैयार नहीं थे और जैविक खेती पर भरोसा नहीं कर रहे थे। लेकिन संस्था द्वारा लगातार बैठकों, प्रशिक्षण और खेत भ्रमण के माध्यम से उन्हें जागरूक कर रहे हैं। धीरे-धीरे किसान तैयार हुए। जिला उद्यान विभाग के सहयोग से उन्हें खीरा, तोरई, मिर्च, पत्तागोभी और फूलगोभी के उन्नत बीज वितरित किए गए। किसानों ने जैविक विधि से इन सब्जियों की खेती कर अच्छी पैदावार ली और बाजार में बेचकर आय अर्जित कर रहे हैं। इस सफलता से उत्साहित होकर इस बार किसानों ने संस्था से प्राप्त बीज से अपने परिवार के खाने के लिए 1-1 बीघा में जैविक धान की खेती की है। साथ ही 15 किसानों ने कृषि रक्षा इकाई से प्राप्त सरसों, मसूर की जैविक तरीके से खेती शुरू कर रहे हैं।

सि. अल्का डुंगडुंग, बंडा

✦✦✦✦✦✦✦

जैविक खाद प्रशिक्षण

काठगोदाम: दिनांक 22 अगस्त 26 को सुचेतना समाजिक सेवा संस्था काठगोदाम के द्वारा संचालित परियोजना जैविक खेती और बेहतर आजीविका के माध्यम से ग्रामीण गरीब किसानों को सशक्त बनाने के अंतर्गत कार्य क्षेत्र के बंडा पिपरिया और पूरनपुर केंद्र के 45 गांवों से 61 किसानों को पंतनगर विश्वविद्यालय हल्द्वानी में भ्रमण कराया जहां पर वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. समीर चतुर्वेदी ने जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए रासायनिक खादों से पृथ्वी तथा मानव स्वास्थ्य को होने वाली हानियों और जैविक खादों के प्रयोग से होने वाले लाभ के बारे में और किस प्रकार से जैविक खेती की जाए और उसमें बीज किस प्रकार बोया जाता है, उसकी देखभाल किस प्रकार करना है और गौ गोबर और गोमूत्र से निर्मित खादों को किस प्रकार बनाना है तथा उनका उपयोग किस प्रकार करना है और कौन-सा बीज जैविक खेती के लिए बेहतर होता है इस पर विस्तृत जानकारी दी। किसानों ने जैविक खेती को करने के लिए गेहूं, चना, मसूर तथा लाही का बीज खरीदा जिससे आगामी फसल को जैविक रूप से किया जा सके और स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके।

थॉमस, पोलीगंज

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 133

पहला इतिहास ग्रन्थ (अध्याय 10-18)

अध्याय एवं पद संख्या का उल्लेख करें। कृपया अपने उत्तर 24 नवम्बर 2026 तक भेज दें।

1. किसने किससे कहा, "तुम यहाँ प्रवेश नहीं करोगे।"
2. ईश्वर की मंजूषा ओबेद एदोम के यहाँ कितने महीने रही ?
3. तूने अपने सेवक से ------ की यह प्रतिज्ञा की है।
4. ईश्वर की मंजूषा के विषय में दाऊद ने क्या आज्ञा दी ?
5. किसने कहा, "अपनी तलवार खींच लो और मुझे मार डालो" ?
6. ------ और यूदा के वंश से कुछ लोग उजाड़खण्ड के बीहड़ों में दाऊद के पास आये।
7. दाऊद की कीर्ति देश देशांतरों तक फैल गई और प्रभु ने उसका आतंक सब राष्ट्रों पर फैला दिया। सही या गलत ?
8. दाऊद ने प्रभु की मंजूषा की सेवा के लिए किसको नियुक्त किया ?
9. किसने लवण घाटी में अठराह हजार एदोमियों को मारा ?
10. दाऊद ने सियोन के किले अर्थात् ------ पर अधिकार कर लिया।
11. किसके पास तुरहियाँ, झाँझे और प्रभु के संगीत के वाद्य थे ?
12. किसने दाऊद को नाचते कूदते देखकर मन ही मन उसका तिरस्कार किया ?

Prepared by: Miss Shweta D Cruze

सूचना: कृपया अपने उत्तर इस इमेल पते पर भेजें: chetnabareilly1989@gmail.com
अथवा इस नम्बर के वाट्सएप पर भेजें: 8533886703 उत्तर के साथ अपना
और अपनी पल्ली का नाम अवश्य लिखें।

✦✦✦✦✦✦✦

MY FAITH (CATECHISM QUIZ) - 133

CATECHISM OF THE CATHOLIC CHURCH: ARTICLES (2616-2633)

Please send your answers latest by 24 November 2026. Kindly send your answers only:

1. The _____ reveals to us how Mary prays and intercedes in faith.
2. Who summarizes the three dimensions of Jesus' prayer?
3. When was the spirit of the Promise was poured out on the disciples gathered together in one place?
4. What is the first movement of the prayer of petition?
5. By _____ every baptized person works for the coming of the Kingdom.
6. "Our prayer is already a turning back to him." True or false?
7. What is the first attitude of man acknowledging that he is a creature before his creator?
8. The prayers of the Virgin Mary in her___ and___are characterized by the generous offering of her whole being in faith.
9. Whose prayer is revealed to us at the dawning of the fullness of time?
10. The _____ contains scarcely any prayers of lamentation.
11. What is the basic movement of Christian prayer?
12. _____ himself answers prayers addressed to him.

Prepared by: Miss Shweta D Cruze

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 132 के उत्तर

1. यरहा (2:34)
2. कहात (6:51)
3. मशेलेम्या (9:21)
4. मारेशा (4:21)
5. लेवी (6:32)
6. दिनहाबा (1:43)
7. यकोन्या और उसका पुत्र सिदकीया (3:16)
8. तीन (7:6)
9. बिनआ (9:43)
10. सही (5:2)
11. गिबओन (8:29)
12. होदिया (4:19)

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 132 के उत्तर

1. Jesus CCC 2602
2. Son of God CCC 2599
3. Faith CCC 2609
4. Prayer CCC 2615
5. False CCC 2613
6. Psalter CCC 2606
7. All things are possible to him who believes CCC 2610
8. The giver CCC 2604
9. Gospel according to St Luke CCC 2600
10. True CCC 2603
11. Jesus CCC 2607
12. Faith CCC 2614

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 132 के विजेता

प्रथम पुरस्कार – रिया, बहेड़ी
द्वितीय पुरस्कार – एंजल, पिपरिया
तृतीय पुरस्कार – सिम्मी, शाहजहाँपुर

My Faith (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 132 के विजेता

प्रथम पुरस्कार – ग्रेसी पवन, मोतीनगर
द्वितीय पुरस्कार – शिल्पा, बाजपुर
तृतीय पुरस्कार – सि. अक्षता, टनकपुर

BIRTHDAYS

1	Rev. Fr. Dominic Selvaraj	05 November
2	Rev. Fr. Christopher Shaji	10 November
3	Rev. Fr. Maurice D'Sa	12 November
4	Rev. Fr. John Bosco Arackal	16 November
5	Rev. Fr. Gregory Frank	17 November
6	Rev. Fr. Ajay M. Lobo	22 November
7	Rev. Fr. Royal Anthony	25 November
8	Rev. Fr. Santosh Crasta	27 November
9	Rev. Fr. Sachin Sagar Lakra	27 November
10	Rev. Fr. Rajesh Jayasheelan	30 November

NECROLOGY

1	Rev. Fr. John Baptist D'Souza	17 November
2	Rev. Fr. John Justin D	21 November